बाल विज्ञान पत्रिका

फरवरी 2008 • 15 रुपए

चकमक

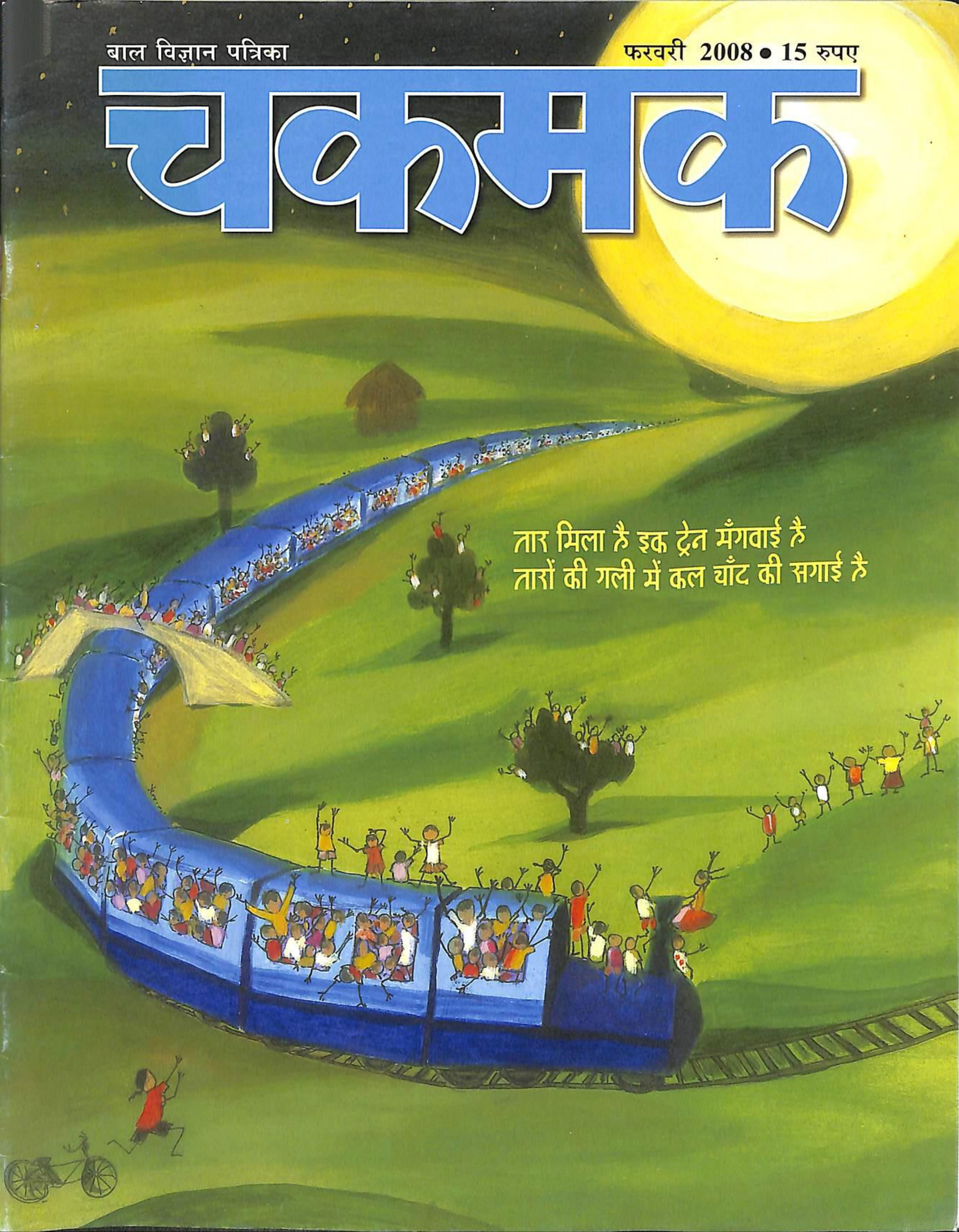

....सलामत रहे दोस्ताना हमारा!

यह नील नाम के मगरमच्छ और मिस्त्र के एक पक्षी प्लोवर की दोस्ती की कहानी है।

ये मगरमच्छ अफ्रीका के उष्णकटिबन्धीय इलाके में रहते हैं। प्लोवर को मगरमच्छ पक्षी के नाम से भी जाना जाता है।

यह मगरमच्छ नदी किनारे मुँह खोलकर दिन भर बैठा रहता है – गरमी से राहत पाने के लिए। भोजन की तलाश में प्लोवर खुले मुँह में घुस जाता है। वह मगरमच्छ के दाँतों के बीच फँसे सड़ते माँस के टुकड़ों को बटोर-बटोर कर खाता है। पर मगरमच्छ उसको नहीं खाता है।

इस प्रकार मगरमच्छ के दाँतों की सफाई हो जाती है और प्लोवर को पेट भर खाना मिल जाता है। दो जीवों के इस तरह मिल-जुलकर रहने को सहजीविता कहते हैं।

दर्जिन का आशियाँ

फोटो: शमशेर अहमद खान

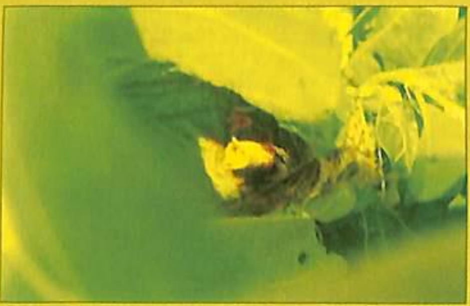

दर्जिन (टेलर बर्ड) दो-तीन बड़ी पत्तियों को बड़ी सफाई से जोड़ती है। पत्तियों के किनारों पर अपनी नुकीली चोंच से कई छेद करती है। फिर इन में धागे पिरोती है। हाँ, धागे के सिरे पर गाँठ लगाना वह नहीं भूलती। धागा बनाती है सेलम की रुई या रेशम के कोयों से। और इसे मज़बूत करने के लिए मकड़ी के जाले को इस पर सानती है।

अलविदा!

सर एडमण्ड हिलेरी

20 जुलाई 1919 -11 जनवरी 2008

29 मई 1953 का यादगार दिन। एडमण्ड हिलेरी और शेरपा तेन्ज़िंग नॉर्गे माउंट एवरेस्ट के शिखर पर चढ़ने वाले पहले व्यक्ति बने।

अगले अंक में ....
वे सिर्फ एक पर्वतारोही नहीं थे.... !

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका • 257 • फरवरी 2008

दोस्तो,

"मेरा पन्ना" के लिए तुम्हारी रचनाएँ कुछ कम मिल रही हैं। इस कॉलम के लिए तुम कहानी-कविता या किसी घटना का विवरण लिख सकते हो। कोई चित्र या फोटो (जो तुमने खुद खींचा हो) भी भेज सकते हो। अगले अंक से पाठकों के पत्रों का एक कॉलम भी शुरू कर रहे हैं उसमें भी तुम *चकमक* के बारे में अपनी राय/सुझाव भेज सकते हो।

सुशील शुक्ल

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सम्पादकीय सलाहकार
रैक्स डी रोज़ारियो
तेजी ग्रोवर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
अतनु राय
डिजिटल एक्सप्रेशन्स

वितरण
अनिल लोखण्डे
कमल सिंह

सहयोग
कविता तिवारी
कार्तिक शर्मा
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क
एक प्रति - 15.00
वार्षिक - 150.00
दो साल - 275.00
तीन साल - 400.00
आजीवन - 1500.00

सभी डाक खर्च हम देंगे। चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं। भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 46 2016
फोनः (0755) 267 1017, 255 0976, 6549033
फैक्सः (0755) 246 1703
chakmak@eklavya.in
www.eklavya.in

इस अंक में...

2 तारे ज़मीं पर...
4 गुगली
5 अपुन की बॉडी सेफ होना
6 कुछ घड़ियाँ गैलीलियो के साथ
8 दिल्ली की गप्प
10 ईश्वर की कहानियाँ
11 कमाल के सवाल...
14 विजयदान देथा की दो कहानियाँ
15 रुस्तम की दो रचनाएँ
16 मेरा पन्ना
20 2 इश्तेहार
22 तुम भी बनाओ...
24 मुकंद और रियाज़
26 चित्र पहेली
30 खट्टी-मिट्ठी चिट्ठी
32 कितनी है हवा में ऑक्सीजन...
34 माथापच्ची/उलझन
36 हरे घास की झोपड़ी...
40 तोते रहते तेरह तोते

आवरण - कनक शशि

30

15

40

8

32
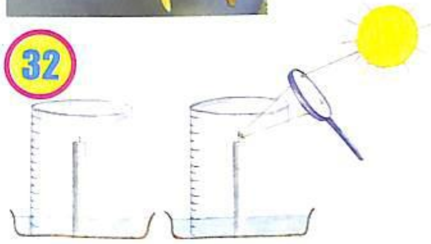

24
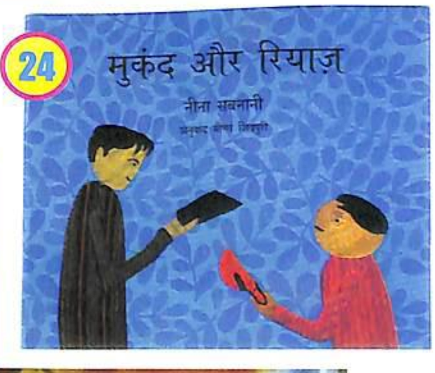

6

16

20

2

तारे ज़मीं पर और दरशील आसमां पर

तारे ज़मीं पर आजकल चर्चा में है। पिछले अंक में तुमने इस फिल्म के संगीत के बारे में पढ़ा। इस फिल्म के ईशान उर्फ दरशील सफारी के अभिनय ने सभी को प्रभावित किया। उसकी शरारतों, उमंगों, सपनों ने जहाँ जी भर हँसाया, वहीं उसकी चुप्पी ने अन्दर तक डरा दिया। इस फिल्म में दरशील ने एक डिस्लेक्सिया पीड़ित बच्चे का किरदार निभाया है। डिस्लेक्सिया पीड़ित लोगों को खास तौर पर लिखी हुई चीज़ें पढ़ने में और हिज्जे पहचानने में दिक्कत होती है। अक्सर इसे दिमागी कमज़ोरी मान लिया जाता है जो यह है नहीं। तो चलिए दरशील से बातचीत करते हैं। और हाँ, डिस्लेक्सिया पर जाने-माने अँग्रेज़ी लेखक रोअल्ड डाल की एक किताब, *निबिलेस्विक का पादरी,* की कहानी भी पढ़ते हैं:

***तारे ज़मीं पर* हिट हो गई है। कैसा लगता है स्टार बनकर?**

दरशीलः मुझे तो वैसा ही लगता है जैसे मैं पहले था। अभी छुट्टियाँ चल रही हैं। स्कूल खुलेगा तो कॉपी-बस्ता उठाकर स्कूल चल दूँगा।

शूटिंग के दौरान कोई मस्ती करते थे?

दरशीलः हाँ, कुछ-कुछ। वहाँ मुझे रोने के लिए ग्लिसरीन दी जाती थी। लेकिन मुझे उसका स्वाद इतना अच्छा लगता कि थोड़ी-सी आँख पर लगाता और बाकी गड़प कर जाता। और हाँ, लाइट वाले दादा को मैं अक्सर कहता कि आपने लाइट पर अण्डे क्यों लगा रखे हैं? दरअसल सेट्स पर जितनी लाइट चाहिए उससे ज़्यादा न हो जाए इसलिए अण्डे के आकार के मीटर लगाए जाते थे जिन्हें मैं अण्डे कहता।

आमिर अंकल को लगता मैं नौटंकी हूँ। हो सकता है मैं हूँ भी। पर वो भी मेरे चीटर-टीचर हैं। खेल में रोमांटी करना उन्होंने मुझे सिखाया।

तुम्हें कौन-सा एक्टर सबसे ज़्यादा पसन्द है?

दरशीलः रितिक रोशन और कौन हो सकता है?

और हीरोइन?

दरशीलः रानी मुखर्जी और ऐश्वर्या राय दोनों।

बड़े होकर क्या करने का इरादा है?

दरशीलः बहुत-सी चीज़ें हैं दिमाग में बनने के लिए। कभी लगता है बिज़नेस करूँ, कभी गहने डिज़ाइन करने का इरादा बनता है। कभी-कभी एक्टर, कभी गायक और कभी डांसर बनने का भी मन करता है।

अमोल गुप्ते और दीपा भाटिया

अमोल *तारे ज़मीं पर* के लेखक तथा क्रिएटिव डाइरेक्टर हैं। **दीपा** ने इस फिल्म के विषय के बारे में सोचा, जाँच-परख की, सम्पादन किया। उन्होंने स्कूल, टीचरों, बच्चों, पढ़ाई के बारे में और ज़्यादा जानने के लिए सात साल मुम्बई के स्कूलों में बिताए।

निबिलेस्विक का पादरी

एक बार की बात है। इंग्लैण्ड में एक बेहद प्यारा पादरी रहता था – रेवरेंड ली। उसका जीवन बड़े मज़े से चल रहा था। फिर एक बार उसका तबादला एक छोटे-से गाँव – निबिलेस्विक – में हुआ। बस यहीं से उसके जीवन में एक तूफान-सा आ गया।

किस्सा यूँ है...

बहुत पहले रेवरेंड ली एक छोटा-सा बच्चा था – रॉबर्ट ली। वह डिस्लेक्सिया से बुरी तरह पीड़ित था। उसे लन्दन के डिस्लेक्सिया संस्थान और कुछ बढ़िया शिक्षकों की भरपूर मदद मिली। रॉबर्ट ने भी क्या ज़बर्दस्त तरक्की की। जब तक वह 18 बरस का हुआ वो लगभग सामान्य बच्चों जैसा हो गया था। वह पादरी बनना चाहता था। अपनी इच्छा पूरी करने के लिए उसने ट्रेनिंग लेनी भी शुरू कर दी थी।

27 बरस का होते-होते वह रेवरेंड ली बन चुका था। और निबिलेस्विक में बतौर पादरी यह उसकी पहली नियुक्ति थी। रेवरेंड ली की पुरानी कार गाँव की ओर दौड़ी जा रही थी। अचानक उसे लगा कि वो अकेला इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी कैसे सम्भालेगा। उसे घबराहट होने लगी। रात को सोने जाते समय भी उसके दिमाग में यही सब घूम रहा था – मिस्टर ली ज़रा सोचो – शादियाँ, मैय्यत, इतवार की पूजा, नामकरण...क्या कर पाओगे इतना सब? वो पसीना-पसीना हो गया। उस खौफनाक रात ली के दिमाग में कोई ऐसा खटका दबा कि पुराना डिस्लेक्सिया फिर लौट आया – थोड़ा रूप बदलकर। ली का दिमाग अनजाने ही वाक्य के सबसे खास शब्दों को चुनता और उलट देता। जैसे trap बन जाता part, God बन जाता dog। इतना सब हो जाता और ली को इसका पता ही न चलता। ली इस गड़बड़ी से अनजान था, इसलिए उसे ठीक करने के बारे में भी न सोचता।

अगले दिन जब रेवरेंड ली उठा तो उसे एक पर्ची मिली। दिल और पैसे से रईस एक महिला के बारे में। उनका नाम था – Miss Prewt। पादरी ली झट उनसे मिलने चल दिए। दरवाज़ा खटखटाया। एक दुबली-पतली लम्बी महिला ने दरवाज़ा खोला। ली बोले, "Miss Twerp (मिस बेवकूफ, गँवार), मैं हूँ आपका नया rotsap। मेरा नाम है Eel (एक प्रकार की मछली), Robert Eel."

इतने में एक प्यारा-सा कुत्ता Miss Prewt की टाँगों के बीच से झाँकने लगा। रेवरेंड ली झुके और मुस्कुराए, "Good god. Good little god." चकराई Miss Prewt बोलीं, "तुम्हारा दिमाग खराब है?" और ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर दिया। रेवरेंड हैरान-परेशान लौट आए सोचते हुए कि ऐसा क्या कसूर हुआ मुझसे?

धीरे-धीरे हालात बद से बदतर होते गए। जल्द ही गाँव भर में फैल गया कि नया पादरी है तो बड़ा प्यारा है, पर है निरा झक्की। उस दिन तो हद ही हो गई। शनिवार को महिलाएँ चर्च में किसी कार्यक्रम की तैयारी में थीं।

"एक बात बताएँ। जब वाइन (एक शराब) का प्याला सभी के बीच घुमाया जाता है तो gulp (एक बड़ा घूँट) करना चाहिए या sip (सुड़कना) भर करना चाहिए," किसी ने पूछा।

"न न न कभी भी plug (मुँह बन्द करना) नहीं करना चाहिए। अगर सभी plug करें तो अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचते-पहुँचते तो प्याले में कुछ बचेगा ही नहीं। समझे! तुम्हें जो करना है वो है pis (पेशाब करना), pis, pis। धीरे-धीरे। सब लोग। पहले व्यक्ति से अन्तिम व्यक्ति तक सभी pis, pis, pis। समझे!" बैठक झटके से बीच में ही खत्म हो गई। अजब अफरा-तफरी थी। ली से ऐसे व्यवहार की किसी को उम्मीद नहीं थी।

यह कोई आखरी किस्सा न था। ऐसे हादसे होते रहे। कुछ लोगों को इनमें मज़ा भी आने लगा। चर्च के अब तक के लम्बे उबाऊ उपदेशों से तो यह अच्छा ही था।

आखिरकार एक डॉक्टर ने उनके मर्ज़ को ताड़ लिया। इस अजब मर्ज़ का नाम था – पीछे से आगे का डिस्लेक्सिया। इसका इलाज भी अजीबोगरीब था। वो यह कि जब भी ली कुछ बोलें, वे बिना मुड़े पीछे की ओर चलते रहें। इससे सारे शब्द ठीक-ठाक हो गए। लेकिन परेशानी यह थी कि पीछे चलें तो किसी से टकराकर गिर न पड़ें! इसका भी इलाज ढूँढ निकाला गया। गाड़ियों में साइड में लगने वाला शीशा पादरी साहब के सिर से बाँध दिया गया। इसने सब ठीक कर दिया। चर्च का नज़ारा तो और भी रोचक हो ही गया था। प्रवचन चलते रहते और पादरी पीछे-पीछे गोले में घूमते जाते।

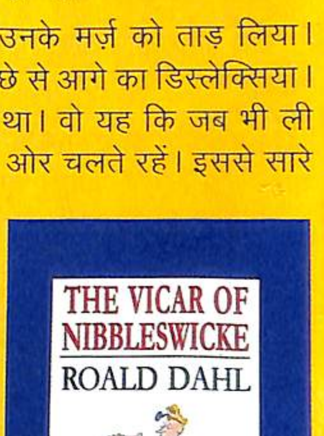

साभार - *The Vicar of Nibbleswicke* (रोअल्ड डाल और क्वेंटिन ब्लेक की यह किताब लन्दन के डिस्लेक्सिया इंस्टीट्यूट के लिए लिखी गई है।)

सुभद्रा सेनगुप्ता

गुगली

"कल्लू उठो, तुमने फिर देर कर दी।"

कल्लू ने ऊँघती शक्ल रज़ाई के भीतर से निकाल कर कहा,

"निम्मी, अभी तो बहुत वक्त है। मैं तो ठीक से सोया भी नहीं।"

"नहीं, वक्त नहीं है। सारे बच्चे कब के निकल गए," निम्मी बोली।

कल्लू बिस्तर से उछल पड़ा। "सभी निकल गए? बाप रे...." वह चिल्लाया! आज फिर उसे कोई झूठी कहानी गढ़नी पड़ेगी मास्टरजी को बताने के लिए। उसे रोज़-रोज़ क्यों देर हो जाती है?

कल्लू ने जल्दी से मुँह-हाथ धोए। पाजामा और कुर्ता खींचकर पहना। पैरों को चप्पल में घुसेड़ते हुए उसने बहन की तरफ ईर्ष्या से देखा। "काश, मेरी भी टाँग टूट जाती! पूरे एक महीने की छुट्टी तो मिलती।"

निम्मी ने अपने पलस्तर लगे बाएँ पैर की तरफ देखा। "हाँ, हाँ। जैसे कि पैर टूटने में बड़ा मज़ा आता हो....!"

कल्लू ने बस्ता खींचा। अम्मी की रखी हुई रोटी और प्याज़ के टुकड़े मुँह में भरते हुए वह गाँव के रास्ते स्कूल की ओर भाग निकला। इस हफ्ते वह तीसरी बार देर से पहुँच रहा था।

मास्टरजी ज़रूर उसे बैंच पर खड़ा रखेंगे।

चाय की दुकान की बगल से भागते हुए कल्लू चिल्लाया, "सलाम चाचा।"

चाय की दुकान वाले धर्मपाल जी मुस्कराए, "अरे कल्लन, अभी कहाँ चल दिए?" कल्लू चुप रहा। चाचा उसे फिर चिढ़ा रहे होंगे। "आज मेरी किस्मत ही खराब है," सोचता हुआ वह भैंसों के बीच से रास्ता निकालने लगा। वह भैंसों से बच ही रहा था कि बद्री खीसें निपोरकर बोला, "बड़ी जल्दी आ गए आज तो।" "हाँ, हाँ, इतनी जल्दी आ गया कि अभी तो सबेरा हुआ ही नहीं, कल का दिन ही चल रहा होगा," कल्लू बुदबुदाया। अब मास्टरजी को क्या बताए? अम्मी बीमार है और मुझे रोटी बनानी पड़ी? बकरी खो गई थी? किसी ने मेरी कलम चुरा ली थी? चप्पल टूट गई थी? ऊँहूँ, ये सारे बहाने तो वह पहले ही इस्तेमाल कर चुका था। मीरा के घर की बगल से निकलते हुए उसने देखा कि उसकी सहपाठी अभी तक नाश्ता कर रही है। "आज इसे भी देर हो गई," मन ही मन खुश होता हुआ कल्लू बढ़ा। "जल्दी करो, वरना तुम्हें हफ्ते भर बैंच पर ही खड़ा रखा जाएगा," कल्लू भागते हुए चिल्लाया। पीछे मुड़कर देखने की फुर्सत कहाँ थी। स्कूल के फाटक पर देखता क्या है कि मुँह में पान की गिल्लौरी भरते हुए खुद मास्टरजी खड़े हैं! कल्लू ठिठक गया।

घबराकर बोला, "ओह, मास्टरजी, आज मेरा कसूर बिल्कुल नहीं है। मुझे नहाने में निम्मी की मदद करनी थी। आपको तो पता है उसका पैर....।"

"मुझे नई कहानी बताने की क्या ज़रूरत है भई, आज तो तुम आधे घण्टे पहले आ गए," मास्टरजी बोले।

"आधे घण्टे पहले? आपका मतलब मैं...मैं..." कल्लू हकलाया। तो यह निम्मी की चाल थी! घर पहुँच कर बताऊँगा उसे, ठहर जा – वह मन ही मन बुदबुदाया। वह सोचने लगा कि बदले में निम्मी को मज़ा चखाने के लिए अब कौन-सी चाल चले।

इस्तकबाल!

विश्व पुस्तक मेले में

(2 -10 फरवरी 2008, प्रगति मैदान, नई दिल्ली)

हम,

चकमक और एकलव्य के

अन्य प्रकाशनों के साथ मिलेंगे...

- **हॉल नम्बर:12 ए, स्टॉल नम्बर:106**
- **हॉल नम्बर:11, स्टॉल नम्बर:23-24**

अपुन की बॉडी सेफ होना

—Suggested by Sushil Joshi

मेरा शरीर मेरा है तुम्हारे शरीर के बॉस तुम ही हो। कोई उसे किसी तरह से नुकसान नहीं पहुँचा सकता है।

शरीर के वे अंग तुम्हारे शरीर के वे अंग जो चड्डी-बनियान से ढँके रहते हैं तुम्हारे अपने अन्दरूनी अंग हैं। कोई उन्हें छूता है, देखने की कोशिश करता है या उनके बारे में तुमसे ज़बर्दस्ती बात करता है तो यह ठीक नहीं है। हाँ, तबीयत खराब होने पर ज़रूर तुम्हारे माता-पिता या डॉक्टर इन्हें देख सकते हैं।

गले लगाना जो लोग तुम्हें अच्छे लगते हैं उनका गले लगना या चुम्मी लेना-देना तो ठीक है। पर अगर कोई तुमसे कहे कि यह बात किसी से न कहना, यह हमारी-तुम्हारी सीक्रेट है, तो तुम ज़रूर इसे किसी ऐसे व्यक्ति को बताना जिन पर तुम्हें विश्वास हो।

उपहार या गिफ्ट हो सकता है कोई कुछ ऐसा करने को कहे जो तुम्हें अच्छा न लगे – कोई ऐसा काम जो तुम्हें अजीब-अजीब-सा लग सकता है या उसे करने में तुम असुरक्षित महसूस कर सकते हो। बदले में वे तुम्हें मिठाई, पैसा या उपहार भी दे सकते हैं। वे जो कहते हैं उसे करने से और उपहार लेने से तुम बिलकुल मना कर दो।

सीक्रेट या गुपचुपी अगर कोई तुम्हें कहीं छूता है और कहता है कि इसे किसी को बताना नहीं, तो हमेशा किसी ऐसे व्यक्ति को इसके बारे में ज़रूर बताना जिन पर तुम्हें विश्वास हो।

नहीं अगर कोई तुम्हें तुम्हारी मर्ज़ी के खिलाफ छूता है तो उसे कड़ाई से मना करो...नहीं ।

चिल्लाओ और भाग जाओ कोई तुम्हें परेशान करता है, ज़बर्दस्ती छूता है जो तुम्हें अच्छा नहीं लगता, तो चिल्लाओ और भाग जाओ। किसी विश्वासपात्र जने को ज़रूर बताना। छिपाना नहीं। इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं है।

साभार - थुलीर

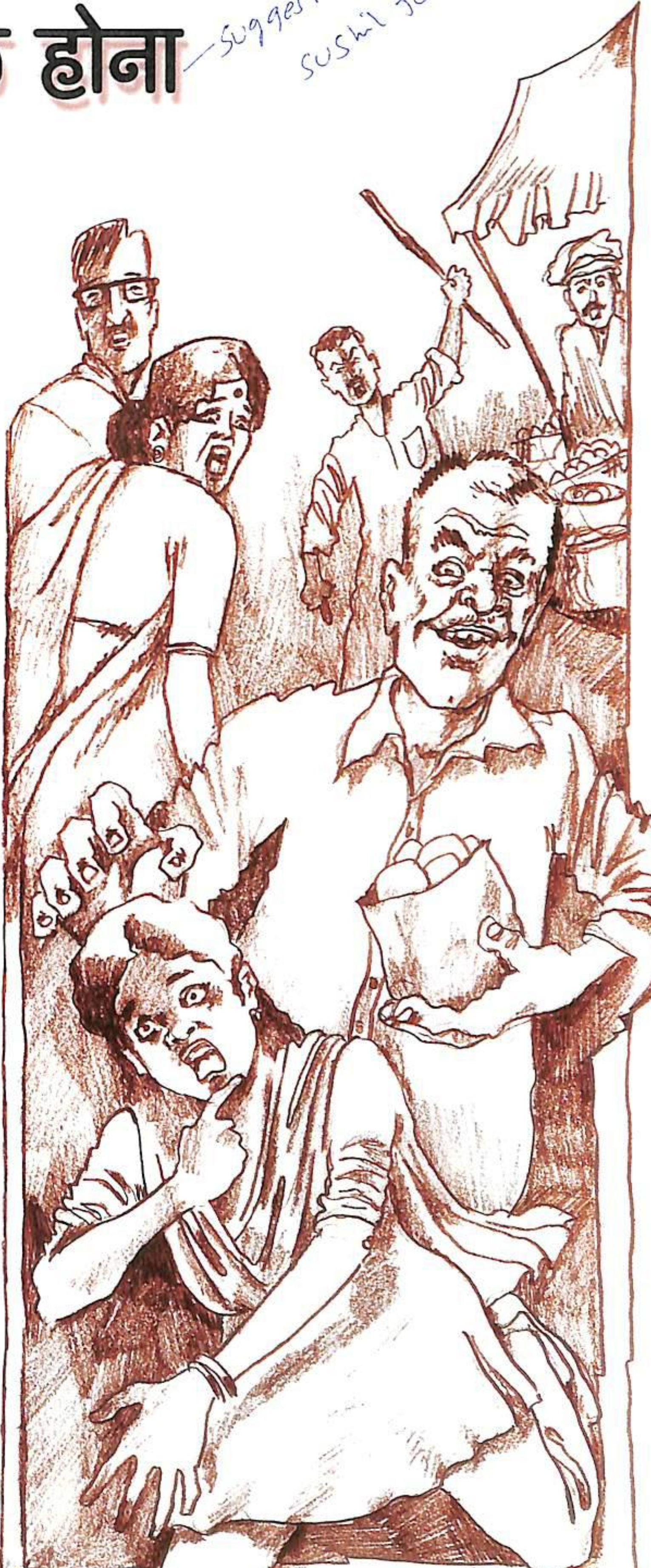

सुशील जोशी

कुछ घड़ियाँ गैलीलियो के साथ

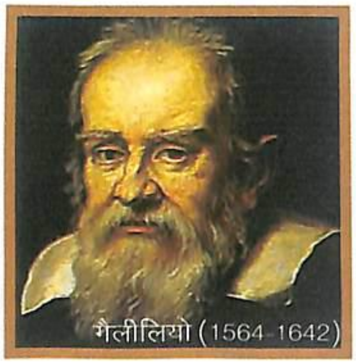
गैलीलियो (1564-1642)

जिस प्रयोग की बात हम करने जा रहे हैं वह इतना आसान है, इतना आसान है कि कभी-कभी तो लगता ही नहीं कि यह प्रयोग है। मगर इस प्रयोग का महत्व बहुत है। इसका सम्बन्ध समय को नापने से है। बात करीब 425 साल पहले की है।

गैलीलियो का नाम तो तुमने ज़रूर सुना होगा। उनका एक प्रयोग बहुत प्रसिद्ध है। वे जानना चाहते थे कि जब कोई वस्तु गिरती है तो उसकी गति कैसी होती है। यदि किसी चीज़ को सीधे गिराया जाए तो वह इतनी तेज़ी से गिरती है कि हम ठीक से कोई नतीजा नहीं निकाल सकते हैं। तो गैलीलियो ने एक गेंद ली और उसे सीधे ऊपर से गिराने की बजाय एक फिसलपट्टी पर से लुढ़काया। जब गेंद लुढ़कती तो गैलीलियो इसे लुढ़कने में लगा समय नापते। इसके लिए वे अपनी नब्ज़ का उपयोग करते थे। या फिर एक दूसरा तरीका अपनाते। उन्होंने एक टंकी में पानी भरा हुआ था जिसके पेन्दे में एक पाइप लगा था। गैलीलियो इस पाइप का मुँह हाथ से बन्द करके रखते थे। जैसे ही गेंद को छोड़ा जाता, गैलीलियो पाइप का मुँह खोलकर उसमें से बहते पानी को एक बर्तन में इकट्ठा कर लेते। फिर इस पानी को नापकर समय का पता लगाते – जितना ज़्यादा पानी निकले, गेंद को लुढ़कने में उतना ही अधिक समय लगा होगा। इस प्रयोग के बारे में बता रहा हूँ ताकि तुम यह समझ पाओ कि गैलीलियो के लिए समय नापना बहुत ज़रूरी था।

मज़ेदार बात यह है कि गैलीलियो के पास समय नापने के लिए अपनी नब्ज़ और बहते पानी से बेहतर तरीका उपलब्ध नहीं था। इससे भी मज़ेदार बात यह है कि गैलीलियो ही वह व्यक्ति था जिसे पेंडुलम यानी दोलक का नियम खोजने का श्रेय जाता है। इसी दोलक की मदद से पहली घड़ी बनाई गई थी जो एक-एक मिनट का समय नाप सकती थी।

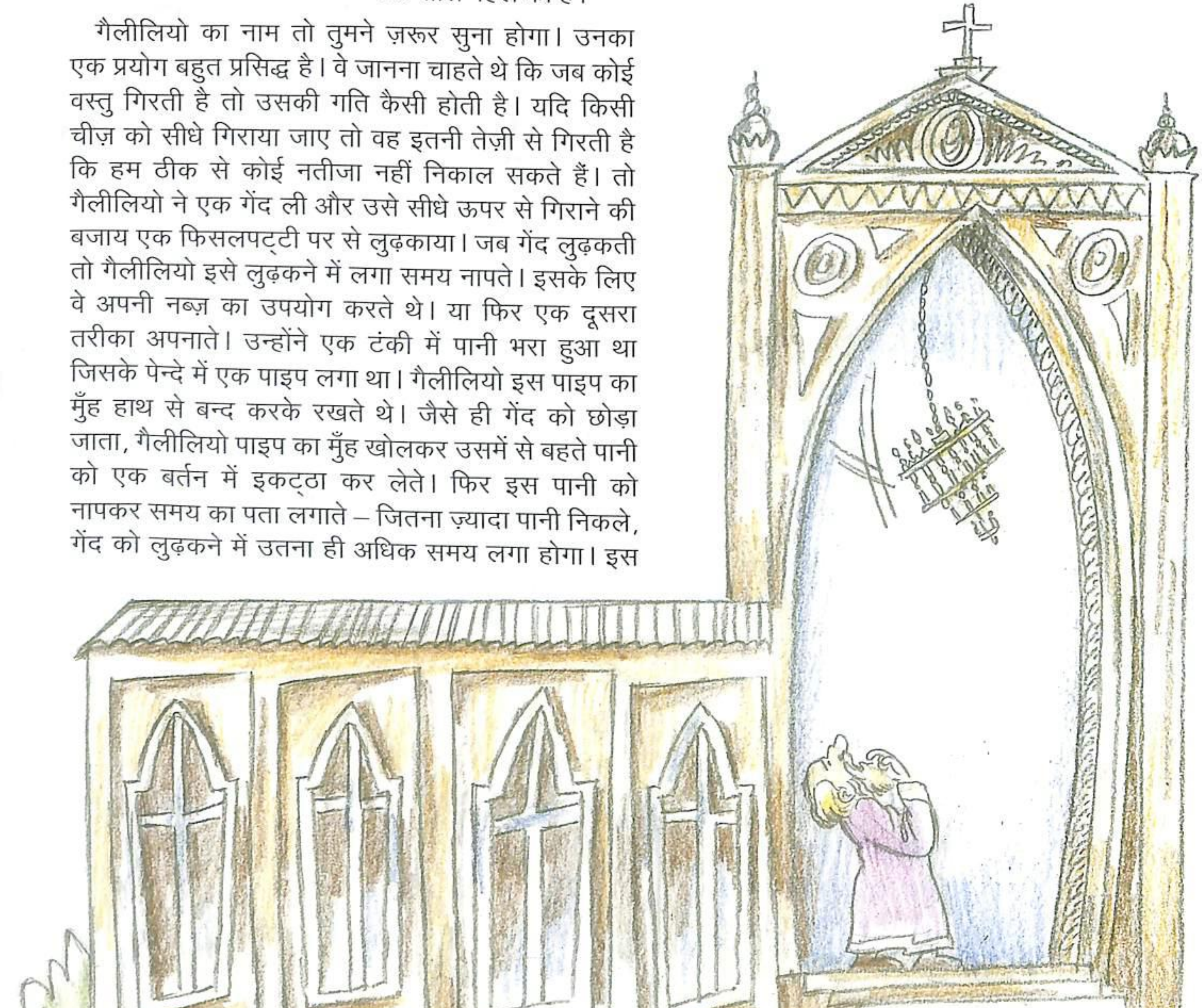

गैलीलियो ने दोलक का नियम 1581 में खोजा था। मगर खुद गैलीलियो इसका उपयोग नहीं कर पाए थे क्योंकि दोलक के नियम के आधार पर पहली घड़ी तो क्रिस्टियान ह्यूजेन्स ने 1656 में बनाई थी। पर सिद्धान्त तो 1581 में खोजा था गैलीलियो ने।

गैलीलियो का प्रयोग

गैलीलियो ने जो प्रयोग किया था वह तुम भी बहुत आसानी से घर बैठे कर सकते हो। वास्तव में गैलीलियो को इस प्रयोग का विचार पीसा शहर के एक गिरजाघर में आया था। वहाँ के बड़े हॉल में फानूस लटके हुए थे। तेज़ हवा चल रही थी। हवा के कारण फानूस डोल रहा था। कभी वह बहुत ज़ोर से डोलता, तो कभी धीमे। यह दृश्य देखकर बाकी लोगों के मन में क्या विचार आए, सो तो पता नहीं मगर गैलीलियो ने गौर से देखा और पाया कि फानूस चाहे ज़ोर-ज़ोर से डोले या धीमे-धीमे, उसे एक दोलन करने में बराबर वक्त लगता है। उस समय गैलीलियो 17 वर्ष के थे। आज होते तो बारहवीं बोर्ड परीक्षा और पी.एम.टी.-पी.ई.टी. की उधेड़बुन में होते। खैर, गैलीलियो ने उस फानूस को देखते हुए अपनी नब्ज़ थाम ली और दोलन का समय नापा। वे दंग रह गए।

घर आकर उन्होंने इसी प्रयोग को तरह-तरह से किया। गैलीलियो को उनका प्रयोग करने दें, तुम वही प्रयोग खुद करके देखो।

करके देखो

एक धागा और एक पत्थर ले लो। धागे के एक सिरे पर पत्थर को कसकर बाँध दो। दूसरे सिरे से धागे को किसी ऐसी जगह लटका दो जहाँ वह दोलन करते समय किसी चीज़ से न टकराए। अब धागे को ताने हुए पत्थर को पकड़कर थोड़ा एक तरफ ले जाकर छोड़ दो। दोलन शुरू हो गया। अब तुम्हें यह पता करना है कि एक ओर से दूसरी ओर जाकर वापिस उसी जगह लौटने में दोलक को कितना समय लगता है। इसे ही एक दोलन कहते हैं। चाहो तो नब्ज़ का उपयोग कर सकते हो या घड़ी हो तो उसकी मदद भी ले सकते हो। एक दोलन (यानी किसी जगह से चलकर उसी जगह लौटने) में लगने वाला समय पता लगाना थोड़ा मुश्किल होता है क्योंकि दोलक जल्दी से लौट आता है। इसलिए हम 50 दोलन का समय निकाल लेंगे और उसमें 50 का भाग देकर एक दोलन का समय निकालेंगे।

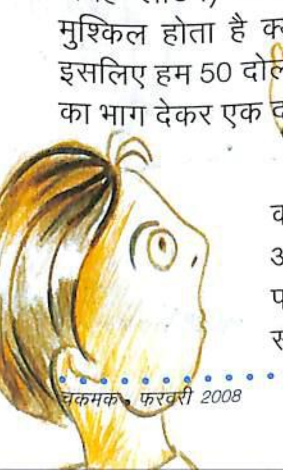

गैलीलियो के समान अपने दोलक को कभी छोटा तो कभी बड़ा झूला झुलाओ और दोलन का समय पता करो। क्या पता चला? क्या गैलीलियो की बात सही है?

इस प्रयोग में कुछ और भी परिवर्तन कर सकते हैं। जैसे:

- यदि पत्थर छोटा-बड़ा करें तो दोलन में लगने वाले समय में क्या अन्तर आएगा। करके देखो। हाँ, यह ध्यान रखना कि जब पत्थर बदलो तो दोलक की लम्बाई बराबर रहनी चाहिए। पत्थर का वज़न कम-ज़्यादा होने पर दोलन के समय में क्या अन्तर आया?
- इसी प्रकार से यह भी करके देखो कि दोलक की लम्बाई बदलने पर दोलन के समय पर क्या असर पड़ता है। मगर इस बात का ध्यान रखना कि लम्बाई तो बदले मगर पत्थर वही रहे।

ये प्रयोग करके ज़रा बताओ कि दोलक का नियम क्या होगा। किन बातों का असर दोलन के समय पर पड़ेगा? और यह भी सोचो कि हमने यह क्यों कहा कि लम्बाई बदलते समय पत्थर मत बदलना और पत्थर बदलते समय धागे की लम्बाई मत बदलना।

शायद तुम्हारे मन में यह सवाल आ रहा होगा कि जब गैलीलियो ने दोलक का नियम खोज लिया था तो फिर वे अपने प्रयोगों में क्यों नब्ज़ और बहते पानी का उपयोग करने को मजबूर हुए। इसका कारण यह है कि दोलक की गति में कुछ समस्याएँ थीं जिन्हें हल करने के बाद ही उसका उपयोग समय को सटीकता से नापने में किया जा सकता था। वह होते-होते सत्तर साल और बीत गए।

तुम्हारे लिए चुनौती यह है कि एक ऐसा दोलक बनाओ जिसे एक दोलन करने में ठीक एक सेकंड का समय लगे। यह काम करने में क्या पापड़ बेलने पड़े, इसकी कहानी मुझे भी लिख भेजना।

जनवरी अंक की चित्र पहेली के हल

1 ब	2 गु	ला		3 ला	4 ल	कि	5 ला
6 ता	ला		7 गि		ह		ल
8 शा	म		9 टा	य	र		मि
	10 अ	ना	र			11 च	र्च
12 कु	ली			13 गु	ल्ल	क	
र			14 गो	ला		15 दे	16 व
17 ता	18 ज	19 म	ह	ल			की
	20 टा	ई		21 क	व्वा	ल	

एक लोककथा

दिल्ली की गप्प

एक थो दिली को पेलवान। बाहे अपनी ताकत पे भोत गुमान थो। बाने भोत सारे दंगल जीते थे। दिल्ली के असफेर कोई पेलवान नई बचो थो, जो बासे कुश्ती लड़े। एक दिन बाहे पता चलो कि आगरा में एक पेलवान है बो भोतई ताकतवर है लेकिन वो कुश्ती लड़वे बाहर नई जात थो। तो दिल्ली के पेलवान ने सोची मैं खुद जाके आगरा के पेलवान से कुश्ती लड़हूँ।

बाने दो चद्दराँ में सत्तू की दो पुटरियें बाँध लईं। पेलवान ने दोई पुटरियें कँधों पे धरीं और चल दओ। चलत-चलत बाहे गैल में ज़ोर की भूक लगी। तो बाने एक तलाब के किनारे जाके दोई पुटरियें खोल लईं और बो हाथ धोवे तलाब में चलो गओ। इत्ते में बड़े ज़ोर को अन्धूड़ा चलो। पूरो को पूरो सत्तू उड़के तलाब में घुर गओ। पेलवान ने सोची जो अच्छो भओ, सत्तू घोरवे की मुसीबत से बचो। बा सत्तू भरो पूरो तलाब पी गयो। पीवे के बाद बाहे आलस आओ। वो भईं पसरके सो गओ। बई तलाब को पानी पास के जंगल के हथ्थी पियत थे। हथ्थी जब पानी पीवे आए तो तलाब खाली डरो थो और उतई पेलवान सो रओ थो। प्यासे हथ्थी गुस्सा में आके पेलवान हे कुचलन लगे। पेलवान हे नींद में लगो बाके ऊपर कीड़ा चल रए हैं। बो उन्हें उठा-उठाके फेंकन लगो। वे हथ्थी दूसरे पेलवान के आँगन में जाके गिरन लगे।

जब पेलवान की नींद पूरी हो गई तो वो दूसरे पेलवान के घर चल दओ। बाने पेलवान के घर पोंच के देखो एक छोटी मोड़ी हथ्थियों हे झड़ा-झड़ा के आँगन के बाहर फेंक रई है। पेलवान ने मोड़ी से पूछो, "काये मोड़ी तेरा बाप कहाँ है?" मोड़ी ने कहा, "बब्बा तो सौ गाड़ी बाँध के जंगल लकड़ी लावे गओ है।" पेलवान ने सोचो, अच्छो मौका है जंगल में जाकेई कुश्ती लड़ हूँ। वो चल दओ जंगल। बई रस्ता से दूसरो पेलवान लकड़ी लदी गाड़िएँ खेंच के ला रओ थो। पेलवान एक खोह में छुप गओ और आखिरी गाड़ी नईं खिचीं तो बाने पीछे आके देखो और पेलवान से कई, "काए भाई का बात है?" दूसरो पेलवान भी कुश्ती लड़वे तैयार हो गओ। लेकिन एक बाधा आन खड़ी भई – हार-जीत को फेसलो कौन करहे? इत्ते में गैल से एक डुकरिया आत दिखी। बा अपने मोड़ा के लाने खेत में रोटी देवे जा रई थी। पेलवानों ने बासे अपनी बात कही। डुकरिया बोली, "मैं तुमरी कुश्ती को फैसला कर तो देती लेकिन अबे मोहे बड़ी उलात है। मेरा मोड़ा खेत में भूखो हुए। वाहे रोटी देवे जा रई हूँ। जासे मैं तुमरी कुश्ती देखवे रुक नई सकूँ।" जा सुनके पेलवान दुखी

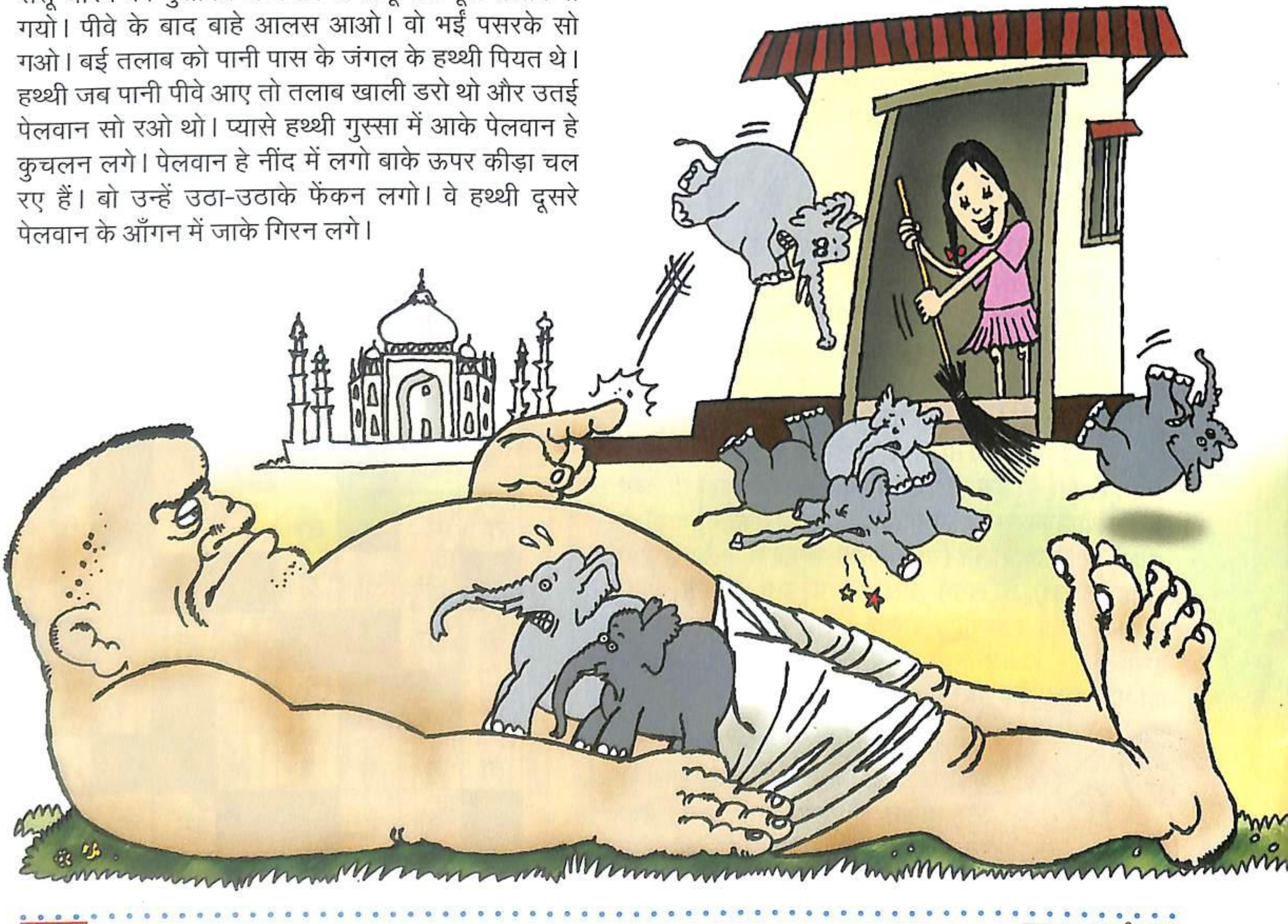

हो गओ। डुकरिया बिन्हें दुखी देखके बोली, "ऐसो करो, तुम दोई जने मेरी हथेली पे कुश्ती लड़त चलो मैं चलत जेहूँ और तुमरी कुश्ती भी देखत जेहूँ।" दोई पेलवान राजी हो गए और डुकरिया की हथेली पे कुश्ती लड़न लगे। डुकरिया सौ कदम धरके सौ कोस दूर खेत में पोंच गई। उते बाको मोड़ा कुदाली से जल्दी-जल्दी खेत खोद रओ थो। बासे खूब धूरा उड़ रई थी। डुकरिया खेत की मेड़ पे पोंची तो बाकी नाक में धूरा जाबे से पेलवान बाकी हथेली से उड़ गए। एक गिरो दिल्ली में तो दूसरो जाके गिरो आगरा में। दोई की हड्डी-पसलिएँ टूट गईं।

कार्मे बर्नो दे काज़ो अनुवादः राजेश जोशी

गधे की प्रार्थना

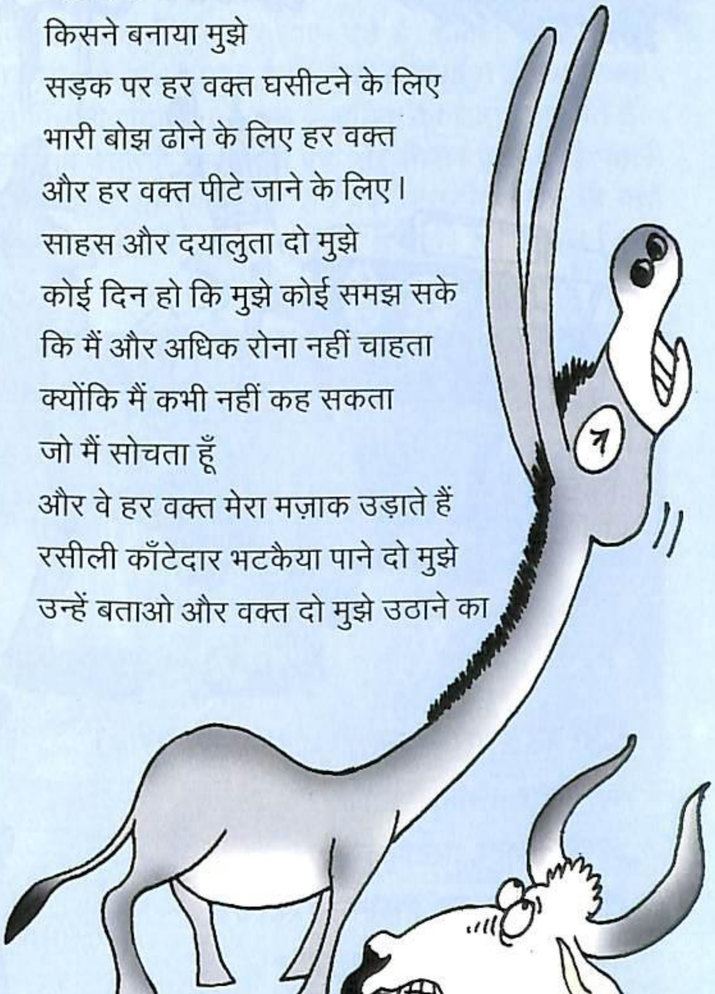

ओह ईश्वर
किसने बनाया मुझे
सड़क पर हर वक्त घसीटने के लिए
भारी बोझ ढोने के लिए हर वक्त
और हर वक्त पीटे जाने के लिए।
साहस और दयालुता दो मुझे
कोई दिन हो कि मुझे कोई समझ सके
कि मैं और अधिक रोना नहीं चाहता
क्योंकि मैं कभी नहीं कह सकता
जो मैं सोचता हूँ
और वे हर वक्त मेरा मज़ाक उड़ाते हैं
रसीली काँटेदार भटकैया पाने दो मुझे
उन्हें बताओ और वक्त दो मुझे उठाने का

बैल की प्रार्थना

प्यारे ईश्वर!
वक्त दो मुझे
बहुत हड़बड़ी में रहता है हर वक्त आदमी
समझाओ उसे कि इतनी जल्दी
नहीं कर सकता मैं
वक्त दो मुझे जुगाली के लिए
वक्त दो पाँव घसीटने को
सोने के लिए वक्त दो
वक्त दो सोचने के लिए

विष्णु नागर

ईश्वर की कहानियाँ

एक बार ईश्वर दिल्ली की डीटीसी बस में चढ़े।

कण्डक्टर ने कहा, "टिकिट।"

ईश्वर ने कहा, "स्टाफ।"

कण्डक्टर ने पूछा, "कौन-सा स्टाफ?"

ईश्वर ने कहा, "मैं ईश्वर हूँ।"

"ईश्वर स्टाफ में नहीं आता। टिकिट लो,"

कण्डक्टर ने कहा

ईश्वर क्रुद्ध हो गए।

उन्होंने कहा, "मेरे नाम पर जो लोग गाना गा गाकर भीख माँगते हैं उन्हें तो तू मुफ्त में सफर करने देता है और मुझसे टिकिट माँगने की बदतमीज़ी कर रहा है? देख लूँगा तुझे।"

तब तक बस स्टॉप आ गया। चेकिंग करने वाले चढ़े। उन्होंने बेटिकिट ईश्वर को नीचे उतार दिया और बीस रुपए की टिकिट काट दी।

ईश्वर को 2500 वर्ष पुराना बोधि वृक्ष दिखाया गया

उस वृक्ष को देख ईश्वर बोले, "यह वृक्ष तो मुझसे भी पुराना है।"

एक भक्त ने पूछा, "भगवान, आप अपनी पूजा तो पृथ्वी पर करवाते हैं और रहते स्वर्ग में हैं। यह विरोधाभास क्यों?"

"इसलिए कि, बच्चे घर की मुर्गी दाल बराबर होती है," ईश्वर ने रहा।

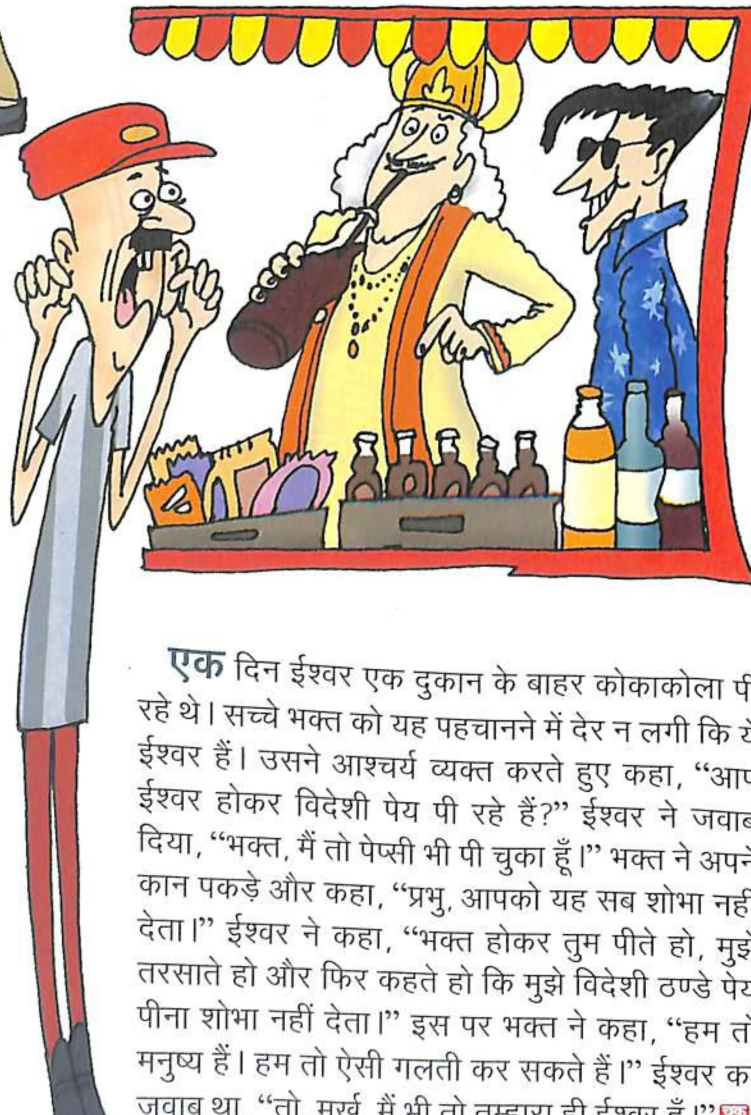

एक दिन ईश्वर एक दुकान के बाहर कोकाकोला पी रहे थे। सच्चे भक्त को यह पहचानने में देर न लगी कि ये ईश्वर हैं। उसने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, "आप ईश्वर होकर विदेशी पेय पी रहे हैं?" ईश्वर ने जवाब दिया, "भक्त, मैं तो पेप्सी भी पी चुका हूँ।" भक्त ने अपने कान पकड़े और कहा, "प्रभु, आपको यह सब शोभा नहीं देता।" ईश्वर ने कहा, "भक्त होकर तुम पीते हो, मुझे तरसाते हो और फिर कहते हो कि मुझे विदेशी ठण्डे पेय पीना शोभा नहीं देता।" इस पर भक्त ने कहा, "हम तो मनुष्य हैं। हम तो ऐसी गलती कर सकते हैं।" ईश्वर का जवाब था, "तो, मूर्ख, मैं भी तो तुम्हारा ही ईश्वर हूँ।"

कमाल के सवाल के कमाल

अमिताश ओझा

क्या तुम्हें लगता नहीं कि हम सब कुछ अजीब से हो गए हैं? हम बस जवाबों की ओर ध्यान देते हैं, सवाल पूछना तो हम भूल ही गए हैं। सवाल पूछने वालों को मूर्ख या पागल समझा जाता है जबकि सच तो यह है कि सही सवालों में ही सही जवाब छिपे होते हैं। जवाब ढूँढने से बड़ा काम है सही सवाल करना। जैसे पिछली सदी के एक बड़े वैज्ञानिक का उदाहरण लेते हैं – सर आइज़क न्यूटन। कहते हैं न्यूटन एक पेड़ के नीचे बैठे थे – हम सब बैठते हैं। अचानक एक सेब गिरा। ऐसा कोई पहली बार तो नहीं हुआ था। पर सवाल केवल न्यूटन ने ही किया। एक साधारण-सा सवाल कि सेब पेड़ से टूटकर नीचे ही क्यों गिरा, आसमान में क्यों नहीं उड़ गया? आज इस सवाल को महान माना जाता है। तो क्या न्यूटन से पहले यह सवाल किसी के दिमाग में नहीं आया होगा?

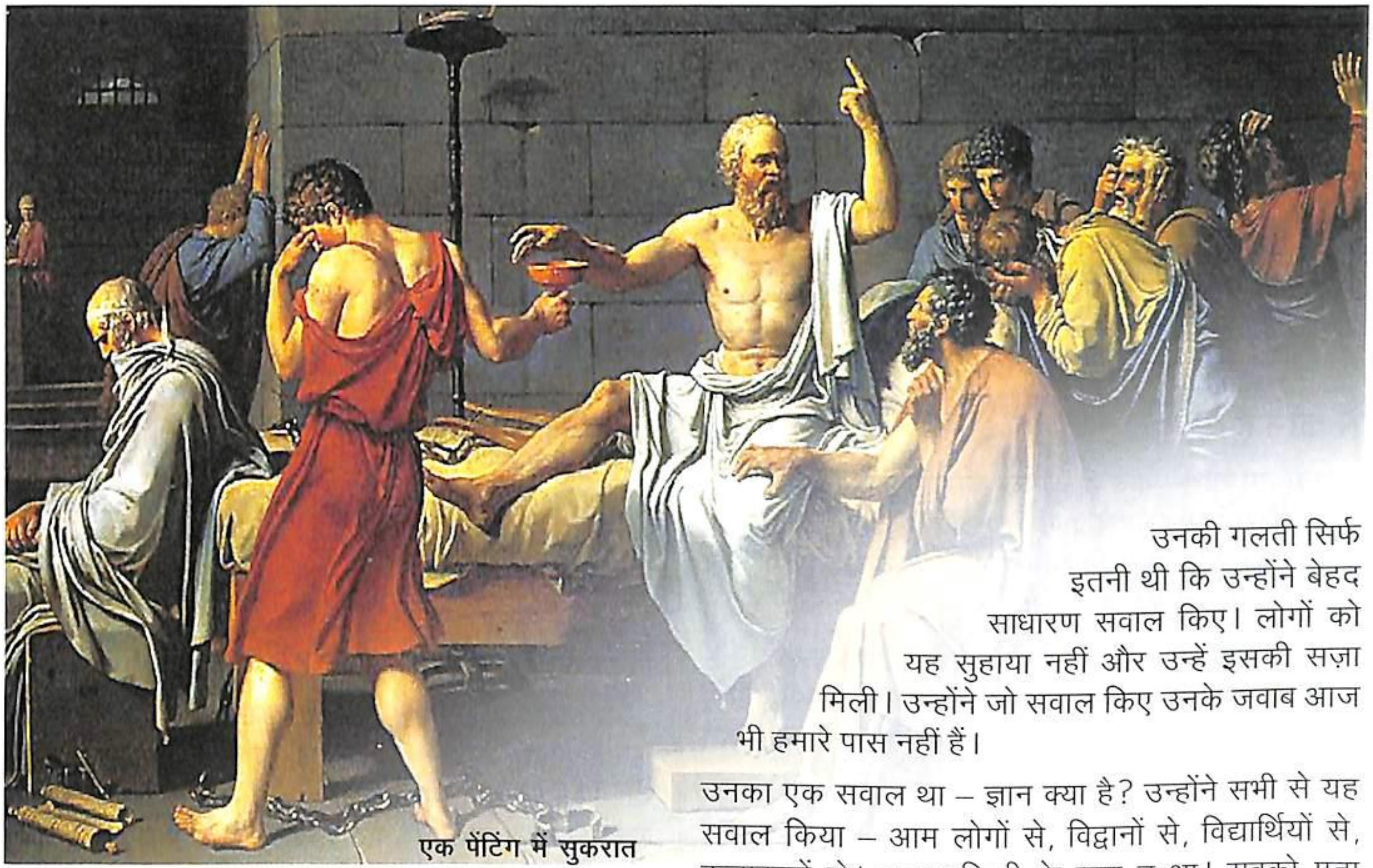

एक पेंटिंग में सुकरात

पूछूँ कि नहीं...

हम सवाल पूछने से डरते हैं। हमें लगता है कि अगर सवाल पूछ लिया तो सब को पता चल जाएगा कि मुझे नहीं आता। तब दुनिया क्या कहेगी? कक्षा के बाकी बच्चे क्या कहेंगे? टीचर क्या सोचेंगे? स्कूलों में भी तो सिर्फ जवाब लिखना सिखाया जाता है, सवाल करना नहीं।

ज़रा इन सवालों को देखो

अजीब सवाल पूछने वालों में सबसे पहला नाम सुकरात का आता है। हमने पढ़ा है कि उन्हें ज़हर दिया गया था। उनकी गलती सिर्फ इतनी थी कि उन्होंने बेहद साधारण सवाल किए। लोगों को यह सुहाया नहीं और उन्हें इसकी सज़ा मिली। उन्होंने जो सवाल किए उनके जवाब आज भी हमारे पास नहीं हैं।

उनका एक सवाल था – ज्ञान क्या है? उन्होंने सभी से यह सवाल किया – आम लोगों से, विद्वानों से, विद्यार्थियों से, कलाकारों से। जवाब किसी के पास न था। सबको पता चलने लगा कि जो लोग विद्वान होने का दावा करते हैं उन्हें यह भी नहीं पता कि ज्ञान क्या है।

एक मज़ेदार कहानी

सुकरात एथेन्स में रहते थे। वहाँ के लोगों ने ज्ञान की देवी डेल्फी से प्रार्थना की और पूछा, "इस धरती पर सबसे ज्ञानी व्यक्ति कौन है?" देवी ने जवाब दिया, "सुकरात।"

लोग सुकरात के पास गए और उनसे पूछा, "ज्ञान क्या है?" सुकरात बोले अगर उन्हें यह पता होता तो वे यह सवाल ही क्यों करते। सभी देवी के पास वापस गए और

उनसे कहा कि जब सुकरात को स्वयं नहीं पता कि ज्ञान क्या है तो वह सबसे ज्ञानी व्यक्ति कैसे हो सकता है? देवी ने जवाब दिया, "सुकरात को यह पता है कि वो क्या नहीं जानता, इसलिए वह ज्ञानी है।"

मैं कौन हूँ?

क्या तुम सोच सकते हो दुनिया का पहला सवाल क्या रहा होगा, जिसे शायद पहले प्राणी ने पूछा होगा? वह सवाल था, मैं कौन हूँ? है न अजब किस्म का सवाल? चलो हम मिलकर इसका जवाब खोजने की कोशिश करते हैं:

पहली कोशिश: इस सवाल को ऐसे भी पूछ सकते हैं – तुम जब सुबह उठते हो तो कैसे कह सकते हो कि मैं वही हूँ जो रात में सोया था? अजीब है न? पर फिर भी जवाब देने की कोशिश करो।

चलो इतना बताओ कि क्या तुम्हारा शरीर ही तुम हो? कुछ लोग कहेंगे – हाँ। क्या हर सुबह तुम अपने आप को शीशे में देखकर सोचते हो – हाँ, मेरे हाथ वही हैं जो सोते समय थे, चेहरा भी वही है जो सोते समय था। अरे, ये पैर भी वही हैं!

मान लो किसी सुबह तुम्हारा शरीर छिपकली का शरीर हो गया हो तो? तुमको आश्चर्य तो होगा पर क्या तुम बदल जाओगे? तुम सिर्फ यही सोचोगे कि अब मैं साइकिल कैसे चलाऊँ या स्कूल कैसे जाऊँ? लोग मुझे कैसे पहचानेंगे? पर तुम तो तुम ही रहोगे? तुम्हें क्या लगता है? चलो इस सवाल के जवाब में हम अपनी कल्पना को जहाँ तक ले जा सकते हैं ले जाएँ।

एक और बात सोचो। मान लो राम नाम के व्यक्ति के हाथ किसी हादसे में कट गए। उसकी जगह श्याम के हाथ लगा दिए गए, जिसकी अभी-अभी मृत्यु हुई है। सवाल यह है कि अगर शरीर ही व्यक्ति की पहचान है तो अब राम कौन है और श्याम कौन है? क्योंकि श्याम का हाथ तो जीवित है। क्या हम कह सकते हैं कि अब राम राम भी है और श्याम भी? हाँ या न! यानी शरीर के बदल जाने के बाद भी हम नहीं बदलते।

दूसरी कोशिश: कुछ लोग कहेंगे कि हम वही हैं जो हमारी आत्मा है। हो सकता है यह जवाब सही लगे। पर हमें यह भी तो पता नहीं कि आत्मा क्या है। हम उसे न देख सकते हैं, न छू सकते हैं। अगर हम दावा करें कि रात सोते समय हमारी आत्मा बदल जाती है तो इसे कोई भी साबित नहीं कर सकता। यानी हमारे सवाल का जवाब अभी भी नहीं मिला।

तीसरी कोशिश: अब क्या करें? क्या हम कह सकते हैं कि हमारी यादें और हमारे अनुभव ही हमें बनाते हैं। पर इसमें भी एक परेशानी है। मान लो कि राम की याददाश्त खो गई है। तो क्या अब राम राम नहीं रहा, कोई और हो गया?

एक बार फिर अपने मुख्य विषय पर आते हैं। हमारा यह प्रयास सवाल में से एक और सवाल खोजने का है। मान लो कि विज्ञान इतनी तरक्की कर ले कि हम किसी के दिमाग से उसकी सारी याददाश्त निकालकर एक मशीन में जमा कर लें। ऐसा हो सकता है? हम कैसे कह सकते हैं कि ऐसा नहीं हो सकता? जैसे आज से सैंकड़ों साल पहले हमने कभी नहीं सोचा होगा कि हम मीलों दूर की घटनाओं को अपनी आँखों के सामने होता देख पाएँगे। पर आज हम देखते हैं। हो सकता है कि आने वाले कुछ सालों में मस्तिष्क से याददाश्त निकालने की मशीन बन जाए।

मान लो एक प्रयोग में हमने राम और श्याम के मस्तिष्क से उनकी याददाश्त निकालकर एक-एक मशीन में जमा कर दी। फिर राम की याददाश्त श्याम में और श्याम की राम में डाल दी। इस प्रयोग के बाद सवाल यह है कि अब राम कौन है और श्याम कौन है? ऊलजुलूल तो नहीं लगा यह सवाल?

तो क्या मिला जवाब?

हमें पहले सवाल का जवाब तो नहीं मिला, पर देखो एक छोटे-से सवाल से इतने सारे सवाल खड़े हुए, जिनका हमने जवाब दिया। और इस प्रक्रिया में हमने अपनी सारी कल्पनाशक्ति लगा दी। कितना सोचा, कितने ही तर्क दिए। सच मानो, एक साधारण-सा सवाल हमें कई ऐसे सवाल पूछने को बाध्य करता है जिन्हें हमने सोचा भी नहीं था। और इस पूरी प्रक्रिया का नतीजा? हमारा ज्ञान जो हमारे जीवन को और विकसित बनाने के काम आना चाहिए।

सवाल पूछने की कला

ऐसे न जाने कितने ही सवाल मानव इतिहास में भरे पड़े हैं। कुछ के उत्तर मिले, कुछ के नहीं मिले। आने वाले समय में और भी न जाने कितने सवाल होंगे। अगर तुम सवाल करने के आदी हो जाओगे तो एक दिन ज़रूर ऐसा सवाल पूछ बैठोगे जो सारी मानव सभ्यता को एक नई दिशा देगा। इससे लोगों के बीच भाईचारा और बढ़ेगा।

सही सवाल पूछने की इस कला को दर्शनशास्त्र कहते हैं। यदि तुमने अपनी ज़िन्दगी में एक भी सही सवाल किया है तो तुम भी दार्शनिक हो। घर से स्कूल के रास्ते में तुमको कितने ही सवाल मिल जाएँगे। अपने आसपास की घटनाओं को ज़रा गौर से देखो। उनके बारे में सोचो और पूछो कि क्या उनका घटना ज़रूरी था। इन घटनाओं का लोगों पर क्या असर होगा? यदि हाँ तो कैसे और नहीं तो क्यों?

तुम अपने सवाल चकमक के पते पर भेज सकते हो, हम किसी अंक में उन पर चर्चा कर सकते हैं।

मैं समझ नहीं पाती
क्यों नीला है आसमान या
क्यों हरी है घास या
क्यों लाल होते हैं गुलाब या
क्यों समुद्र नीला होता है।
लेकिन जो सबसे ज़्यादा मैं
समझ नहीं पाती
क्यों दुनिया है
गोल
और जो सबसे ज़्यादा समझती हूँ
वह यह है कि क्यों हरे होते हैं जंगल।

– क्रिस्टी मेयेर, नौ साल, अमरीका अनुवादः तेजी ग्रोवर

(यह कविता *पोयम्स बाई यंग अमेरिकन्स* से ली गई है।)

हथेली पर बाल क्यों नहीं जमते?

एक दिन बादशाह ने बीरबल से पूछा, "मेरी हथेली पर बाल क्यों नहीं हैं?" बीरबल ने जवाब दिया, "हुजूर, आप रोज़ इन्हीं हाथों से इतना दान दिया करते हैं, जिसकी रगड़ से बाल नहीं जमने पाते।"

बादशाह यह सुन मन-ही-मन प्रसन्न हुए। बादशाह ने फिर पूछा, "पर बीरबल तुम्हारी हथेली पर बाल क्यों नहीं हैं?" बीरबल ने उत्तर दिया, "बादशाह सलामत, दान लेते-लेते उसकी रगड़ से मेरी हथेली पर बाल नहीं उगे।" बादशाह चुप हो गए। उन्होंने फिर प्रश्न किया, "तो हमारे दरबार के अन्य लोगों की हथेली पर बाल क्यों नहीं उगते?"

बीरबल मुस्कुराए, "हुजूर, इसका जवाब तो बिल्कुल सीधा-सादा है। जब आप मुझको व अन्य जनों को दान देने लगते हैं, तब दरबारी बेचारे ईर्ष्या से अपने हाथ मलते हैं। इसी रगड़ से इनकी हथेलियों पर बाल नहीं उगते।"

विजयदान देथा की दो कहानियाँ

पगड़ी तो भैंस चर गई

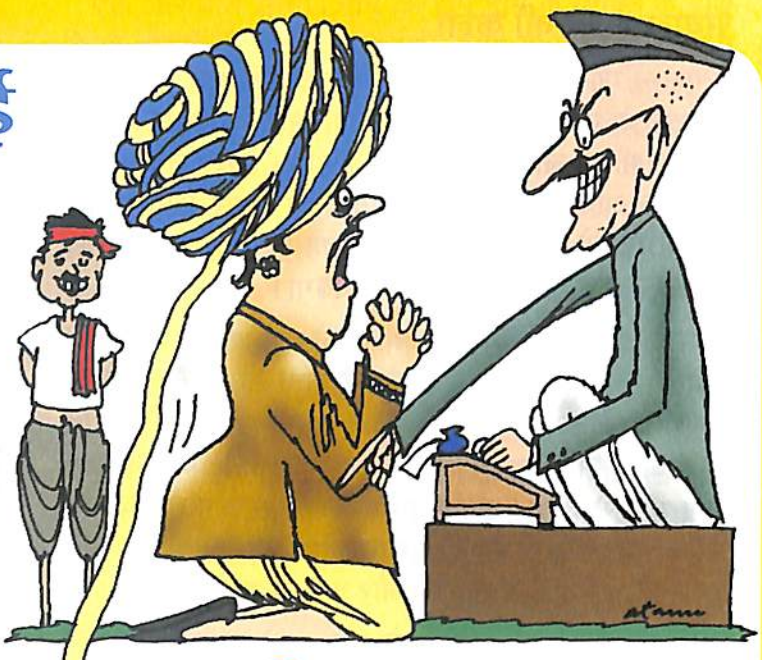

एक गूजर किसी बनिए का कर्ज़दार था। गूजर का दुर्भाग्य कि हर साल कुछ न कुछ अनहोनी होती रही। कर्ज़ चुकाना उसके लिए मुश्किल हो गया। अपने रुपयों की जोखिम देख बनिए ने उस पर मुकदमा दायर कर दिया। अपने हक में जल्दी फैसला हो जाने की नीयत से बनिए ने हाकिम को बीकानेर की एक बढ़िया पगड़ी उपहार में दी।

गूजर ने देखा कि न्याय की इन कचहरियों में रिश्वत से ही काम बनते हैं, तो उसने भी चुपके से अत्यधिक दूध देने वाली एक भैंस हाकिम को नज़राने में दी। हाकिम ने गूजर के हक में फैसला सुना दिया।

न्यायालय में खड़ा बनिया रिश्वत का भेद कैसे प्रकट करता! परन्तु फिर भी उसे इशारे-इशारे में समझाते हुए सिर की पगड़ी को हाथ में लेकर याचना के स्वर में कहा, "अन्नदाता, मेरी पगड़ी की कुछ तो लाज रखिए!"

हाकिम उसके इशारे को समझ गया। वापस वैसा ही जवाब दिया, "सेठजी, तुम्हारी पगड़ी तो भैंस चर गई!"

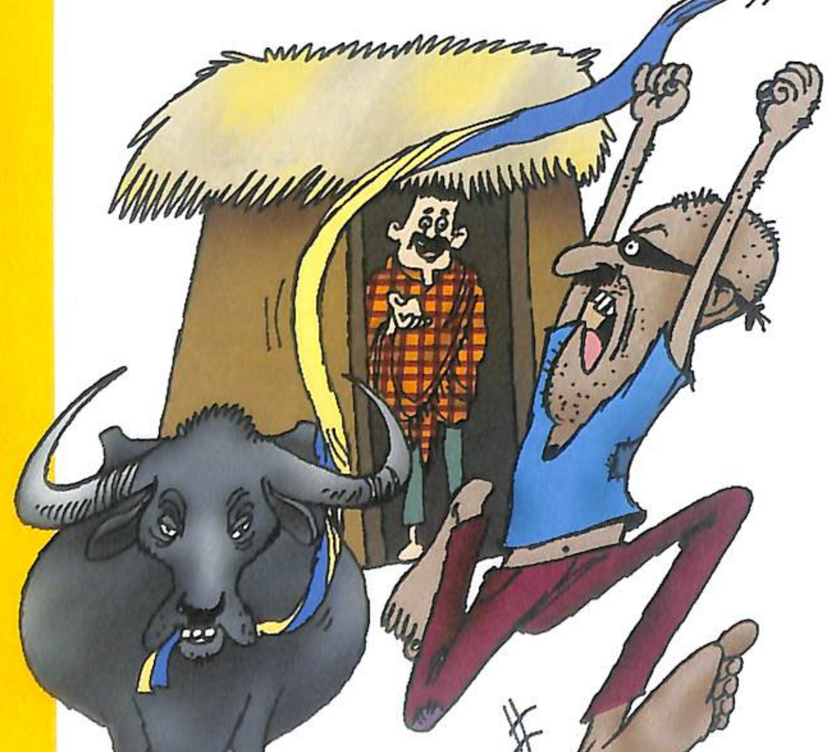

अपूर्व मनुहार

सर्दियों की ढलती रात एक चोर एक ढोली की झोंपड़ी में सेंध लगाकर घुस पड़ा। खटर-पटर से ढोली की आँख खुल गई, तो भी वह चिल्लाया नहीं। गुदड़ी से मुँह निकाल संयत भाव से चोर का रंग-ढंग देखता रहा। झोंपड़ी ठौड़-ठौड़ से नीचे झुक आई थी, इस कारण पाँच-सात थोगे लगे हुए थे। चोर जिधर भी किसी चीज़ की टोह में आगे बढ़ता उसके सिर में टक्कर लग जाती। चोर का सिर भन्ना गया।

आखिर टोह लेते-लेते कैर-सांगरियों की मटकी हाथ लगी। चोर ने अपनी कम्बल बिछाकर सारी मटकी खाली करली। वह गाँठ बाँधने ही वाला था कि ढोली करवट बदलकर कम्बल पर ही लुढ़क पड़ा। चोर ने सोचा कि खींचने से तो वह जग पड़ेगा। स्वतः ही वापस करवट बदलेगा तब फुर्ती से कम्बल खिसका लेगा। पर ढोली ने तो जानकर ही वैसा किया था। चोर को इस तरह प्रतीक्षा करते देखा तो ढोली को सहसा ज़ोर की हँसी आ गई। हँसी सुनते ही चोर ने हड़बड़ाकर भागने की चेष्टा की तो लकड़ी के थोगे से एक और ज़ोर की टक्कर लगी। ढोली ने हँसते-हँसते व्यंग के स्वर में कहा, "यों क्या, कुछ न कुछ तो लेते जाओ!" चोर ने भी वापस वैसा ही जवाब दिया, "क्या खाक लेता जाऊँ? कमाई करने वाला तो तू है। फिलहाल तो अपनी कम्बल छोड़े जा रहा हूँ! तुझ जैसे ही सभी कमाने वाले हो जाएँ तो चोरों को तो भूखों मरना पड़े।"

चित्र - शोभा घारे

कऊआ उदास था

कऊआ उदास था।

उदास। उदास।

कऊआ उदास था।

मुझे यह तो नहीं पता कि वह क्यों उदास था, पर था वह उदास। मैंने उसकी आँखों में एक कातर भाव देखा था। इसमें कोई शक नहीं कि वह उदास था। कभी-कभी उसके चेहरे पर गुस्सा चमकता था, पर फिर जल्दी ही वह फिर उदास हो जाता था। गौरय्या के बच्चे को गिद्ध की निगाह से देखता या उसके अण्डों को तोड़कर सुड़कता, वह उदास बना रहता था। उस वक्त भी जब वह अन्य कऊओं से लड़ता-झगड़ता था या छत की मुँडेर पर काँव-काँव करता था, यह साफ नज़र आता था कि वह उदास था। कभी एक तीर की तरह वह नदी की ओर जाता था। या थोड़ी देर किसी डाल पर शान्त बैठा रहता था। फिर उसी उदास भाव से उड़कर अगले कई घण्टों तक गायब हो जाता था।

देखने को बहुत कुछ था

देखने को बहुत कुछ था।

जैसे:
पेड़,
उसका तना,
उसकी टहनियाँ,
उसके पत्ते
जो हवा में लहराते थे,
फूल जो उस पर आते थे,
पक्षी जो उसी पेड़ पर घोंसले बनाते थे –
उन घोंसलों में छोटे-बड़े, चितकबरे अण्डे जो कुछ ही दिनों में पक्षियों में बदल जाते थे।

देखने को बहुत कुछ था
मेरी कल्पना में।
जैसे:
किसी मौसम में एक पेड़।

चित्र - सिद्धार्थ

प्रज्ञा, पहली, दिल्ली

Translation checked by Teji

मुझे याद है वह दिन...

मखमली आकाश के घनघोर अन्धेरे में
टिमटिमा रहे थे तारे
जैसे किसी दुश्मन को हरा आए हों।
हवा में
कुछ सुर्ख लाल रंग के अंगारे
अब भी तैर रहे थे।

मैं और मेरा परिवार
बैठे आसमां तले
खुश और भाव-विभोर
इन पलों में भी कोई
कराह रहा था किसी छोर।

उस निष्ठुर कमरे में
नानू बेचारे
खाँस रहे थे, हाँफ रहे थे
कुछ आखिरी साँसों के सहारे
ज़िन्दगी की जंग में थे

मैं फोन पर चीखी थी – भेजो जल्दी एम्बुलेंस
देर हो गई थी
अस्पताल भी ले गए
पर...
गुज़र चुके थे नानू

यह दुख से भरी खबर सुन
मेरी आँखों से निकली थी अश्रुधार
मैं खुद से ही रही पूछती
यह सब कैसे हुआ

मेरा दिल टूट रहा था
मैं इसके टूटने को सुन रही थी
आवाज़ भी मैं सुन रही थी
कभी खत्म न होने वाली धक-धक
वह दिन आज भी याद है, हाँ याद है...

काव्या गोपाल, सातवीं, गुड़गाँव, हरियाणा
(अँग्रेज़ी में प्राप्त हुई कविता का अनुवाद।)

हमारी प्यारी बिल्ली

हमारे घर में प्यारी-सी बिल्ली रहती है। जब मैंने पहली बार बिल्ली को देखा तो वो बहुत मोटी थी। मैंने सोच लिया कि मैं इस बिल्ली को पाल लूँगा। फिर मैं फटाक से रसोई में गया और एक कटोरा दूध गरम किया और एक रोटी तोड़कर जल्दी से बिल्ली को दे दिया। जब उसने दूध और रोटी खा ली और वहीं बैठ गई, मैं उसके पास गया। तो वो भाग गई। तो फिर मैं घर में चला गया।

जब शाम को पापा घर आए तो मैंने उनको बताया कि पापा आज बाहर बिल्ली आई थी, वो बहुत मोटी थी। मैंने उसको एक कटोरा दूध और एक रोटी तोड़ के दी खाने को। जब मैं उसके पास गया तो वो भाग गई। पापा इस बिल्ली को मैं पाल लूँ। पापा ने कहा, "पाल लो बेटा।"

वो दिन बीत गया। जब मैं सबेरे उठा तो मैंने देखा कि वो मोटी बिल्ली पतली हो गई। जब मैं उसके पास गया तो मैंने देखा की तीन बच्चे उसके पेट के पास बैठे थे। जब बिल्ली ने मुझको देखा तो उसने म्याऊँ-म्याऊँ बोलना शुरू कर दिया। मैं जल्दी से अन्दर गया और पापा को बोला, "पापा वो देखिए मोटी बिल्ली के तीन बच्चे उसके पेट की बगल में बैठे हैं।" पापा ने कहा कि जल्दी से बिल्ली और बिल्ली के बच्चों को दूध दो। मैंने कहा, "ठीक है पापा।" मैं रसोई में गया और मैंने दो कटोरा दूध गरम किया और एक कटोरा दूध बिल्ली को दिया और एक कटोरा दूध बिल्ली के बच्चों को दिया। फिर बाद में जाकर मुझको पता लगा कि बिल्ली इसलिए मोटी हुई थी क्योंकि उसके पेट में तीन बच्चे थे। जब बिल्ली के बच्चे बड़े हो गए तो वो हमेशा के लिए अपनी माँ के साथ चले गए।

आदित्य सिंह, जालन्धर, पंजाब

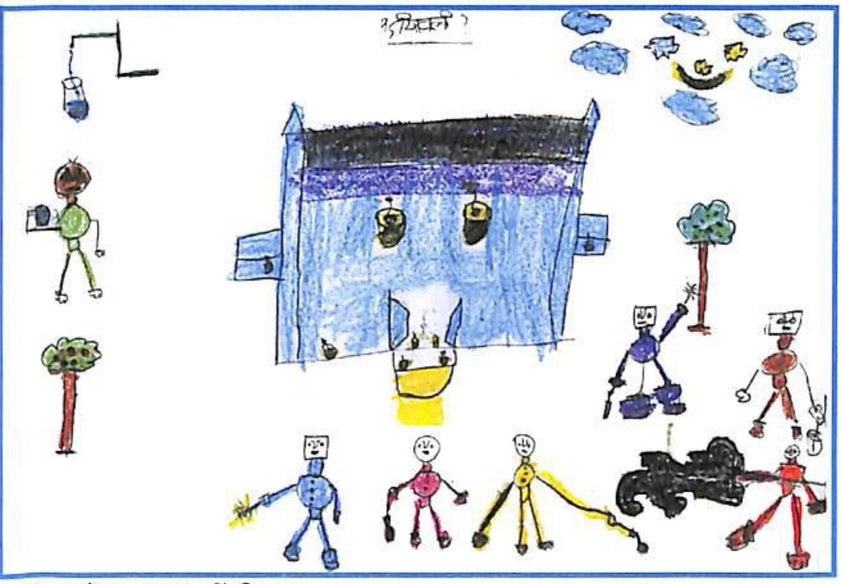

शुभम पटेल, पता नहीं लिखा

विदुषि, पाँचवी, टोंक, राजस्थान

शिवम, छठवीं, कानपुर, उ. प्र.

हिमांगी, उम्र सात साल, लखनऊ, उ. प्र.

मेरी नोट बुक

हम कोलकाता शहर में रहते हैं। यहाँ रिक्शे ज़्यादा चलते हैं। हमारा छोटा-सा घर है। इसमें दो कमरे हैं। लकड़ी के पार्टिशन से बने। वहीं एक कोने में मम्मी की रसोई है, जहाँ से उनकी चूड़ियों की आवाज़ जब-तब आती रहती है।

बाबा दिन भर रिक्शा चलाते हैं, जिससे उनके चेहरे पर 50 साल की उम्र में ही झुर्रियाँ आने लगी हैं। शरीर साँवला पड़ गया है। हाथ हैंडिल को पकड़े-पकड़े सख्त हो गए हैं, जिनका एक चाँटा लगने पर इन्सान घूमता नज़र आता है। बाबा पूरा दिन रिक्शा चलाकर जितना भी पैसा कमाते हैं, उससे घर का, भैया और मेरी पढ़ाई का खर्च निकलता है।

जब कभी बाबा थकान महसूस करते हैं तो भी यह सोचकर रिक्शा चलाते हैं कि अगर मैं एक दिन भी रिक्शा नहीं चलाऊँगा तो घर का खर्च कैसे चलेगा। उस दिन बाबा छुट्टी नहीं करते, बल्कि शाम को जल्दी आ जाते हैं।

मम्मी पापा के पैसों को ध्यान से घर में खर्च करतीं हैं। कभी-कभी कुछ परेशान-सी लगती हैं। उनकी सिकुड़ी भौंहें यह कहती हैं कि घर कब तक यूँ ही चलेगा। अब तो उनके खिले चेहरे व आँखों के नीचे काले निशान आने लगे हैं।

भैया कॉलेज में पढ़ते हैं और मैं 11 वीं कक्षा में। हमारी सुबह चिड़ियों के चहचहाने से होती है तथा रात चर्च के घण्टे से। भैया ज़्यादा लम्बे नहीं हैं पर कुछ भरे बदन के हैं। वो भी बाबा का बोझ कम करने के लिए पार्ट-टाइम जॉब करते हैं। जिससे कम से कम अपनी पढ़ाई का खर्च कुछ तो स्वयं उठा सकें। पर बाबा ज़्यादा से ज़्यादा मेहनत करके भैया को पढ़ाना चाहते हैं, जिससे भैया के पैसे बच सकें और वे आगे काम आ जाएँ।

भैया ने कॉलेज में दाखिला लेने के बाद किताबें खरीद ली थीं, पर नोट्स बनाने के लिए कुछ भी नहीं था। इस समय उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि लिखने के लिए कुछ भी नहीं है तो कॉपी कहाँ से लाएँ। उन्होंने कमरे में इधर-उधर देखा। तब उनकी नज़र अलमारी के ऊपरी हिस्से पर पड़ी जहाँ उनकी कुछ पुरानी कॉपियाँ पड़ी थीं। उन्होंने उन कॉपियों को उतारा व पलट कर देखा तो हर कॉपी में आठ-दस पेज खाली मिले।

भैया ने उन पेजों को निकाला व उन्हें सुई-धागे से सिलकर नई कॉपी बना ली। पहले पन्ने को उन्होंने खूबसूरती के साथ अपना नाम लिखकर सजाया। फिर मुझे आवाज़ लगाई – रौनक.....रौनक......!

मैं मम्मी के साथ सब्ज़ी कटवा रहा था। भैया की आवाज़ सुनकर उनके पास गया। भैया बोले, "देख, कैसी लग रही है?" मैं उनके हाथ की कॉपी को अपने हाथ में लेकर बोला, "भैया बहुत अच्छी है। कहाँ से ली?" भैया बोले, "मैंने पुराने पन्नों को सजाकर बनाई है।" मैं भैया की इस नई कॉपी को हाथ में लेकर देखता रहा। कॉपी बहुत अच्छी लग रही थी।

भैया का यह तरीका मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने भी इस तरीके को अपनाने की सोची। अगर मैं भी भैया की तरह पुराने पन्नों से कॉपी बना लूँ तो बाबा के पैसे बच जाएँगे। यही सोचते-सोचते मैं मम्मी के साथ फिर से सब्ज़ी कटवाने लगा।

रौनक (अंकुर संस्था, दिल्ली की आशा गुप्ता द्वारा संकलित)

इस पन्ने में "अ" से शुरू होने वाली कितनी चीज़ें हैं?

मैंने ढूँढीं...

"अ" से शुरू होने वाली कौन-कौन-सी चीज़ें हमसे छूट गईं? उनके चित्र बनाओ।

नगर पालिका का इश्तेहार

2 इश्तैहार

सूचना

जबकि, कुछ बद्‌दिमाग लोग इस शहर में जगह-जगह मिलते हैं। और उत्तेजक भाषा का उपयोग करते हैं। प्रजा को महामहिम रानी साहिबा के प्रति भड़का रहे हैं।

इस इश्तेहार के द्वारा सूचित किया जा रहा है कि इस शहर की सीमाओं में भविष्य में ऐसी उथल-पुथलकारी सभाओं को होने नहीं दिया जाएगा।

जान कैफ
महापौर
नगर पालिका के नाम से (जुलाई 1839)

ईश्वर रानी साहिबा को सलामत रखे।*

*इंग्लैण्ड का राष्ट्रगीत

बात आज से लगभग 170 साल पहले की है। उन दिनों इंग्लैण्ड के मज़दूरों का एक महत्वपूर्ण आन्दोलन चल रहा था। अत्यन्त गरीबी और अत्याचार का विरोध करते-करते काफी समय बीत चुका था। अब उन्हें यह लगने लगा कि संसद में पहुँचकर उन्हें अपने हितों को ध्यान में रखकर कानून बनाने होंगे। लेकिन उन दिनों अमीर ही संसद के चुनाव में वोट दे सकते थे। मज़दूरों ने एक माँगपत्र या चार्टर बनाया जिसमें इंग्लैण्ड के हर पुरुष को वोट देने का अधिकार माँगा गया था। (तुमने शायद ध्यान दिया होगा कि वे सिर्फ पुरुषों को वोट देने के अधिकार की माँग कर रहे थे। उन दिनों महिलाओं के लिए वोट के अधिकार के बारे में आन्दोलन शुरू नहीं हुआ था।) इस चार्टर के समर्थन में जगह-जगह सभाएँ होने लगीं व जुलूस निकाले जाने लगे। इसे चार्टर आन्दोलन कहा जाता है।

चार्टर आन्दोलनकारियों का इश्तेहार

सूचना

जबकि, कुछ लोग जो खुद को इस शहर की नगर पालिका कहते हैं, ने हर इंग्लैण्डवासी के जन्मजात अधिकार को चुनौती देने का दुस्साहस किया है – यह अधिकार जिसके तहत नागरिक आपस में मिल सकते हैं, चर्चा कर सकते हैं, और रानी या संसद के सामने अपनी समस्याओं को लेकर दरख्वास्त कर सकते हैं।

जबकि, ये लोग संविधान में अंकित अधिकारों को रोकने की जुर्रत कर रहे हैं, जिन्हें रोकने का अधिकार रानी या संसद को भी नहीं है। अतः अब हम शहर के सारे निवासियों को सूचित करते हैं कि, यह उनका कर्त्तव्य है कि वे अपने संवैधानिक अधिकारों की रक्षा के लिए मिलें और इस नगर पालिका को दिखा दें कि उनके इस दुस्साहस को इंग्लैण्ड के सारे अच्छे नागरिक धिक्कारते हैं।

ईश्वर जनता को सलामत रखे।

पुनश्चः हर रोज़ शाम को साढ़े छह बजे चौथी गली में सभा हुआ करेगी।

अभी तुमने जिन दो इश्तेहारों को पढ़ा वे दोनों उसी दौर में इंग्लैण्ड के एक छोटे-से शहर न्यू कासल में लगाए गए थे।

आज हर वयस्क, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, अमीर हो या गरीब, विद्वान हो या अँगूठा टेक, मालकिन हो या नौकरानी, सबको वोट देने का अधिकार है। और सभी संसद के लिए होने वाले चुनाव में समान रूप से भाग लेते हैं। यह बात आज हमें बहुत सामान्य लगती है। लेकिन यह अधिकार पाने के लिए दुनिया भर के लोगों ने कड़ा संघर्ष किया। इस दौरान उन्हें घोर अपमान और तकलीफें सहनी पड़ीं।

तुम्हें क्या लगता है – क्या वोट देने का अधिकार मिलने से मज़दूरों की समस्याएँ सुलझ गई होंगी?

क्या पढ़े-लिखे और अनपढ़ लोगों को समान रूप से वोट देने का अधिकार होना चाहिए?

अपनी राय तुम हमें *चकमक* के पते पर भेज सकते हो। चुनिन्दा पत्रों को मिलेगा एक बहुत ही आकर्षक ईनाम।

रवीन्द्र केसकर

तुम भी बनाओ फिरकी

कागज़ को मोड़कर हवाई जहाज़, नाव तो तुमने बनाए ही होंगे। चकमक अब तुम्हारे खज़ाने को और बढ़ाने वाली है। इस बार इसमें फिरकी जुड़ी, अगली बार कुछ और...

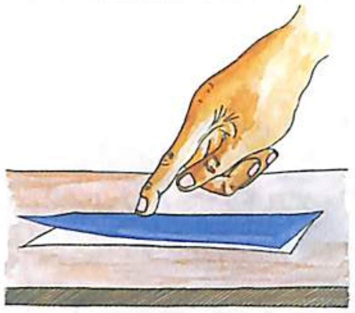

एक बात ध्यान रखना कि कागज़ पर पक्का निशान बनाने के लिए उसे हमेशा ज़मीन पर या किसी सख्त चीज़ पर रखकर ही मोड़ना। और मोड़ने के लिए उँगली के पोर का इस्तेमाल करना।

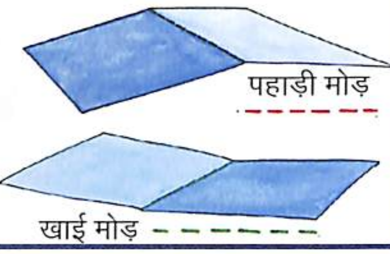

ऊपर वाला पहाड़ी मोड़ है और नीचे वाला खाई मोड़। यहाँ पहाड़ी मोड़ को लाल और खाई मोड़ को हरे रंग की लकीर से दिखाया गया है।

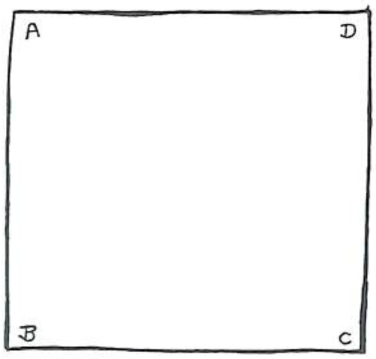

1

एक चौकोर कागज़ लो। कागज़ ज़्यादा बड़ा होगा तो फिरकी बड़ी बनेगी। छोटी फिरकी ज़्यादा तेज़ी से घूमती है। इसलिए 9x9 सेंटीमीटर का कागज़ अच्छा रहेगा। शादी के कार्ड वाला कागज़ फिरकी बनाने के लिए बढ़िया रहेगा।

कागज़ के चारों कोनों पर A, B, C, D लिख लो। कागज़ के पीछे भी इसी तरह लिख दो। ध्यान रहे कि A के पीछे A और B के पीछे B... हो।

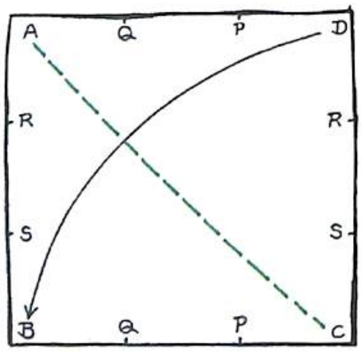

2

कागज़ के तीन बराबर हिस्से करना।

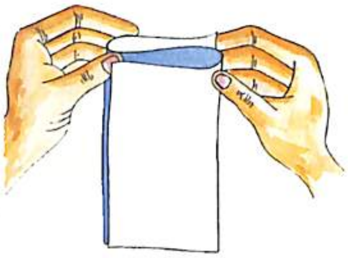

चित्र में दिखाए तरीके से कागज़ को इस तरह मोड़ो कि AD तीन बराबर हिस्सों में बँट जाए। यानी AQ=QP=PD हो जाए। Q और P बिन्दु पर हल्का-सा दबाकर निशान लगा लो। ध्यान रहे कि Q और P पर पूरा मोड़ना नहीं है। BC भुजा में भी P और Q बिन्दुओं पर निशान लगा लो।

इसी तरह AB भुजा के भी तीन बराबर हिस्से करो: AR=RS=SB

R और S बिन्दुओं पर हल्का सा दबाकर निशान लगा लो। DC को भी तीन बराबर हिस्सों में बाँटो और R व S बिन्दुओं पर निशान लगा लो।

कागज़ के पीछे भी सभी P, Q, R, S बिन्दुओं पर निशान लगा लो। D कोने को B तक लाओ और AC पर पक्का मोड़कर खोल दो।

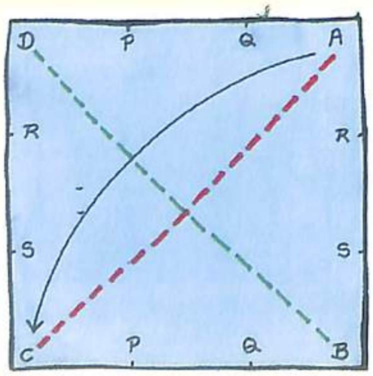

3

कागज़ को पलट दो। अब कागज़ का रंगीन हिस्सा ऊपर की ओर है। A कोने को C तक लाओ और DB पर पक्का मोड़कर खोल दो। अब इस कागज़ में एक पहाड़ी मोड़ है (AC) और एक खाई मोड़ (DB)।

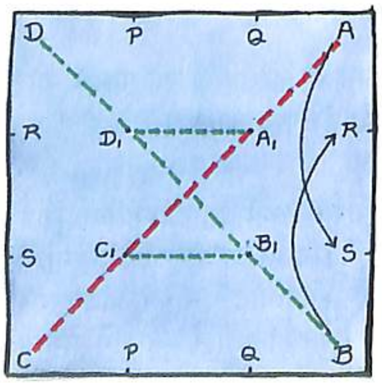

4

DA को SS तक लाओ और केवल D1A1 तक का सीमित मोड़ बनाकर खोल दो। इसी तरह CB को RR तक लाओ और C1B1 का सीमित मोड़ बनाकर खोल दो।

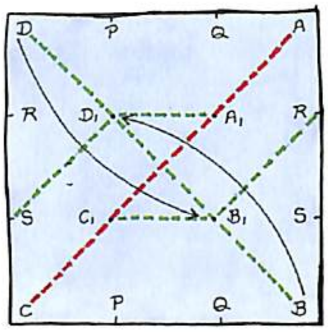

5

B कोने को D1 तक लाओ और पूरा PR मोड़ने की बजाय केवल B1R तक पक्का मोड़ो औऱ खोलो।

इसी तरह D को B1 तक लाओ और SQ मोड़ने की बजाय D1S तक मोड़ो औऱ खोलो दो।

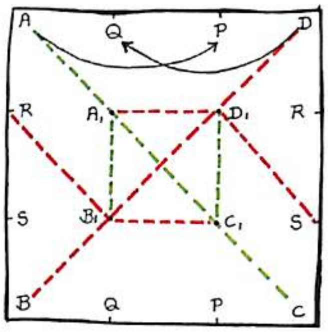

6

कागज़ को एक बार फिर पलटो। AB को PP तक लाओ और A1B1 तक का सीमित मोड़ बनाओ औऱ खोलो दो। इसी तरह DC को QQ तक लाओ और D1C1 का सीमित मोड़ बनाकर खोल दो।

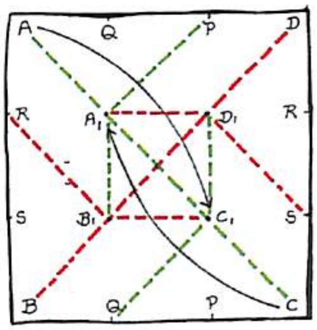

7

इसके बाद पहले की तरह C को A1 तक लाओ और QC1 मोड़ बनाओ और A को C1 तक लाओ और A1P पक्का मोड़ बनाओ और खोलो दो।

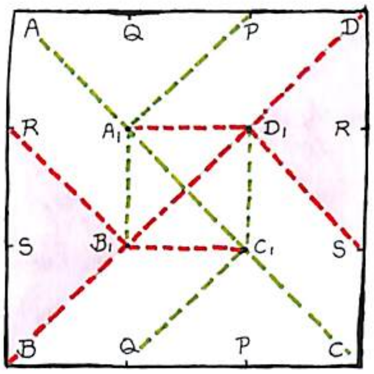

8

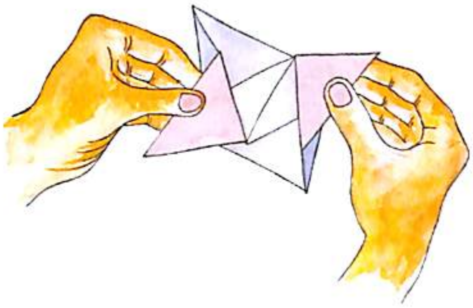

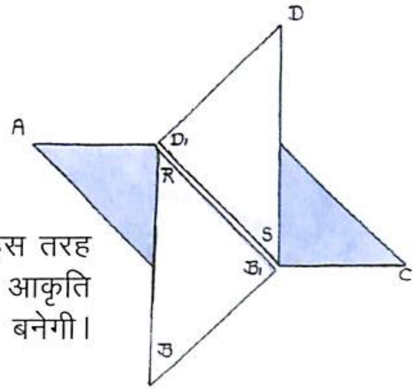

इस तरह की आकृति बनेगी।

चित्र में दो त्रिभुज RB1B और DD1S लाल रंग में दिख रहे हैं। इन्हें चित्र में दिखाए तरीके से पकड़ो और RB1 को D1S के पास लाओ। तुम देखोगे कि बीच में A1C1 खुद ही आ गई है।

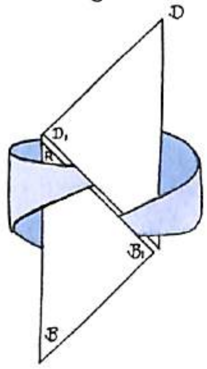

9

A कोने को मोड़कर D1S जेब में डालो और C कोने को RB1 जेब में।

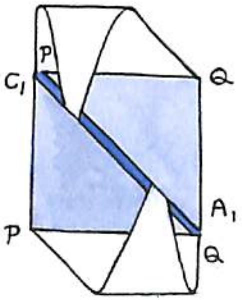

10

इस आकृति को पलटो। अब पहले की तरह D कोने को मोड़कर C1Q जेब में और B कोने को PA1 जेब में डालो।

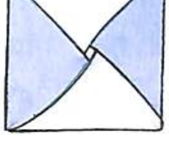

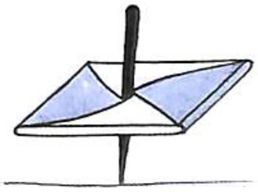

फिरकी तैयार है

माचिस की तीली के एक सिरे को कुछ पैना बनाओ और फिरकी के बीच में घुसा दो।

घूमी फिरकी फिरक फिरक...

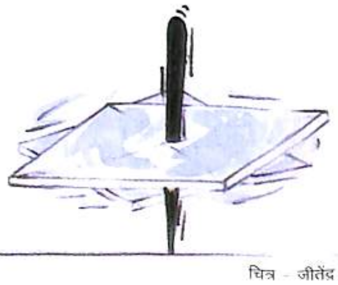

चित्र - जीतेंद्र ठाकुर

यह कहानी भारत-पाकिस्तान के बँटवारे की पृष्ठभूमि पर रची गई है। दोस्ती, प्रेम, आनन्द, रंग और सुख-दुख की दिलकश कहानी।

नीना सबनानी की इस खूबसूरत कहानी को किताब के रूप में उतने ही खूबसूरत ढंग से पेश करने का कमाल किया है तूलिका प्रकाशन ने। अगर तुम्हें मौका मिले तो इस किताब को ज़रूर पढ़ना-देखना।

किताबः मुकंद और रियाज़

लेखकः नीना सबनानी

अनुवादः वीणा शिवपुरी

प्रकाशकः तूलिका पब्लिशर्स, 13 पृथ्वी एवेन्यू अभिरामपुरम, चैन्नै - 600018

कीमतः सौ रुपए

मुकंद और रियाज़

मुकंद के पास एक क्रिकेट की टोपी थी। उसके सबसे अच्छे दोस्त रियाज़ को वह टोपी बहुत पसन्द थी। वह उसे पहनना चाहता था लेकिन मुकंद उसे अपनी टोपी कभी नहीं देता था। जब भी मुकंद अपनी टोपी पहनता तो उसे लगता था कि वह कुछ भी कर सकता है।

एक दिन मुकंद अपनी साइकिल चला रहा था। रियाज़ उसे पकड़ने के लिए पीछे दौड़ रहा था। हड़बड़ी में मुकंद साइकिल से गिर गया और उसकी बाँह टूट गई।

रियाज़ मुकंद को एक हड्डी बैठाने वाले के पास ले गया। वह कराची बन्दरगाह के पास कीमारी में रहता था। हड्डी बैठाने वाले को सब कीमारी का भैया कहते थे और वह सबका दोस्त था। उसने लड़कों से कोई फीस नहीं ली लेकिन उन्होंने कुछ पैसे दानपात्र में डाल दिए।

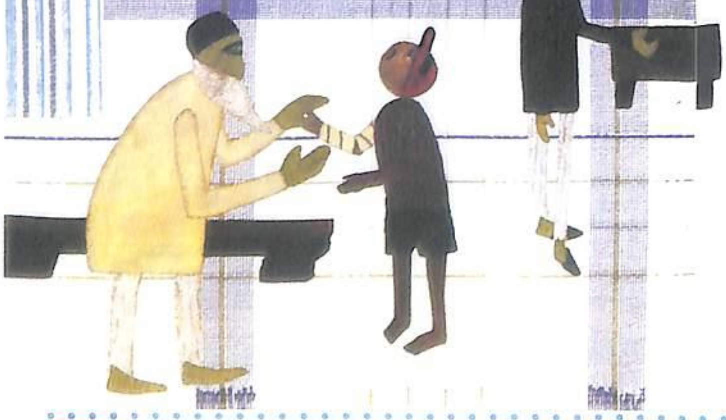

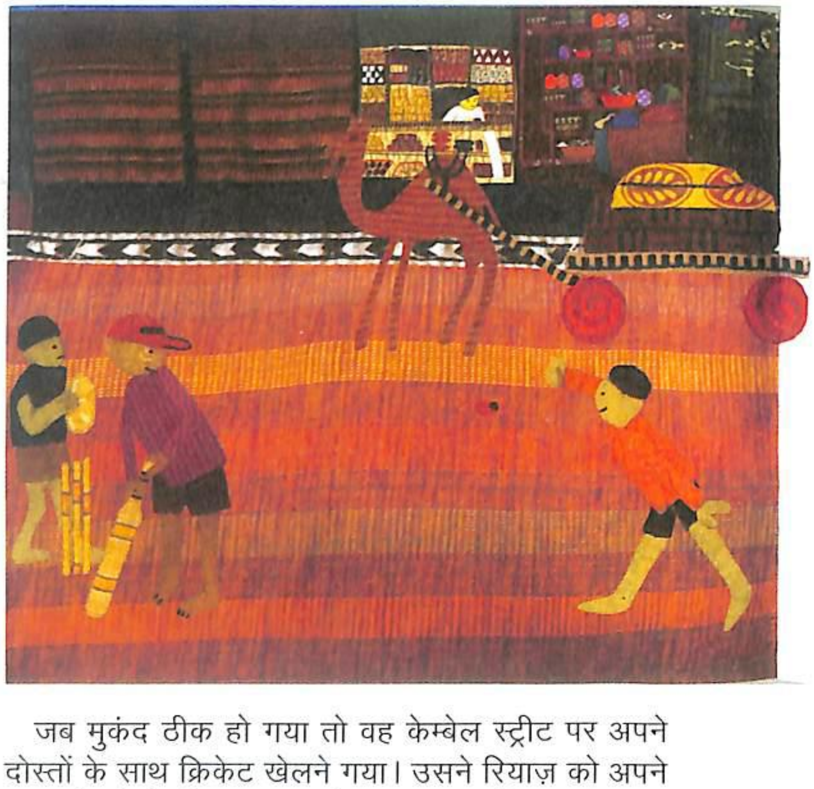

जब मुकंद ठीक हो गया तो वह केम्बेल स्ट्रीट पर अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने गया। उसने रियाज़ को अपने साथ खेलने के लिए बुलाया लेकिन रियाज़ ने कहा कि वह पढ़ना चाहता है। अचानक...

....एक फौजी गाड़ी आई और सड़क पर रुक गई। उसमें से एक अँग्रेज़ सिपाही नीचे कूदा। उसने सब लड़कों से अपने-अपने घर चले जाने को कहा।

मुकंद और रियाज़ घर जाने की बजाय बाज़ार चले गए, अपने पसन्दीदा नानबाई की दुकान पर। वहाँ उन्हें बिस्कुट से भरे मीठे बन खाना बहुत अच्छा लगता था। उस रोज़ भी उन्होंने दुकान से कुछ बन खरीदे और पुस्तकालय चले गए।

रविवार को मुकंद गुरुद्वारे के बाहर लोगों के जूतों की देखभाल करता था। वह आने वाले भक्तों को बर्फ का ठण्डा पानी भी पिलाता था। यह पानी वह अपने प्यारे दोस्त लाडाराम फालूदावाले के यहाँ से लाता था।

लाडाराम उससे खुश था क्योंकि मुकंद उसकी मदद करता था। वह मुकंद को खाने के लिए कुल्फी और घर ले जाने के लिए एक बालटी पानी भी देता था।

घर पर मुकंद अक्सर टोपी पहनकर आइने के सामने खड़ा हो जाता और भविष्य के रंग-बिरंगे सपनों में खो जाता था।

एक दिन मास्टरजी स्कूल नहीं आए। उस रोज़ मुकंद और उसके दोस्तों ने खूब मस्ती की।

थोड़ी देर बाद रियाज़ वहाँ आया। उसने मुकंद से जल्दी घर चलने को कहा। उसने बताया कि उनके मुल्क के दो टुकड़े कर दिए गए हैं – भारत और पाकिस्तान। अब मुकंद के परिवार को यहाँ से जाना होगा। इसलिए मुकंद को जल्दी घर जाकर सामान बाँधना चाहिए।

मुकंद को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। रास्ते में भी अजीब चीज़ें नज़र आईं। लोग चीखते-चिल्लाते भाग रहे थे। हर तरफ अफरा-तफरी का माहौल था। उसे सड़क पर खून भी दिखाई दिया।

रियाज़ कुछ कुर्ते और जिन्ना टोपियाँ लेकर उनके घर आया। उसने मुकंद से कहा कि वह अपने कपड़े और टोपी बदल ले। मुकंद ने साफ इनकार कर दिया। इस पर मुकंद के पिता ने उसे समझाया कि उनकी जान खतरे में है। अगर वे कुर्ते और जिन्ना टोपी पहन लेंगे तो बाकी लोगों के जैसे ही दिखाई देंगे। इस तरह से वे बगैर किसी का ध्यान अपनी ओर खींचे चुपचाप कराची से बाहर निकल सकेंगे।

रियाज़ ने उनकी बहुत मदद की। वह गाड़ी चलाना जानता था। हालाँकि उस समय उसकी उम्र गाड़ी चलाने के लायक नहीं थी लेकिन यह मुश्किल की घड़ी थी। रियाज़ मुकंद और उसके परिवार को बन्दरगाह पर ले गया जहाँ एस.एस. शिराला नामक जहाज़ उन्हें भारत में बम्बई ले जाने के लिए खड़ा था। बन्दरगाह पर भी लोगों की भागमभाग थी, इसलिए उन्हें झटपट जहाज़ पर सवार होना पड़ा।

मुकंद के परिवार ने रियाज़ को बहुत धन्यवाद दिया। मुकंद रियाज़ को छोड़कर जाना नहीं चाहता था। अब वह किसके साथ खेलेगा?

मुकंद जहाज़ की रेलिंग पकड़ कर खड़ा था और रियाज़ को देख रहा था। रियाज़ ने उसकी ओर देख कर हाथ हिलाया। एकाएक मुकंद ने अपनी पसन्दीदा टोपी उतारी और रियाज़ की तरफ उछाल दी।

जहाज़ रवाना हो गया। दोनों दोस्त एक-दूसरे की ओर देखते हुए हाथ हिलाने लगे। वे हाथ हिलाते रहे, हिलाते रहे जब तक कि एक-दूसरे की नज़रों से ओझल नहीं हो गए।

मुकंद और रियाज़ फिर कभी एक-दूसरे से नहीं मिले लेकिन जब भी मुकंद जिन्ना टोपी को देखता तो उसे अपने सबसे अच्छे दोस्त की याद आ जाती थी।

यह सब मुझे मुकंद ने बताया। मुकंद मेरे पिता थे।

चित्र पहेली

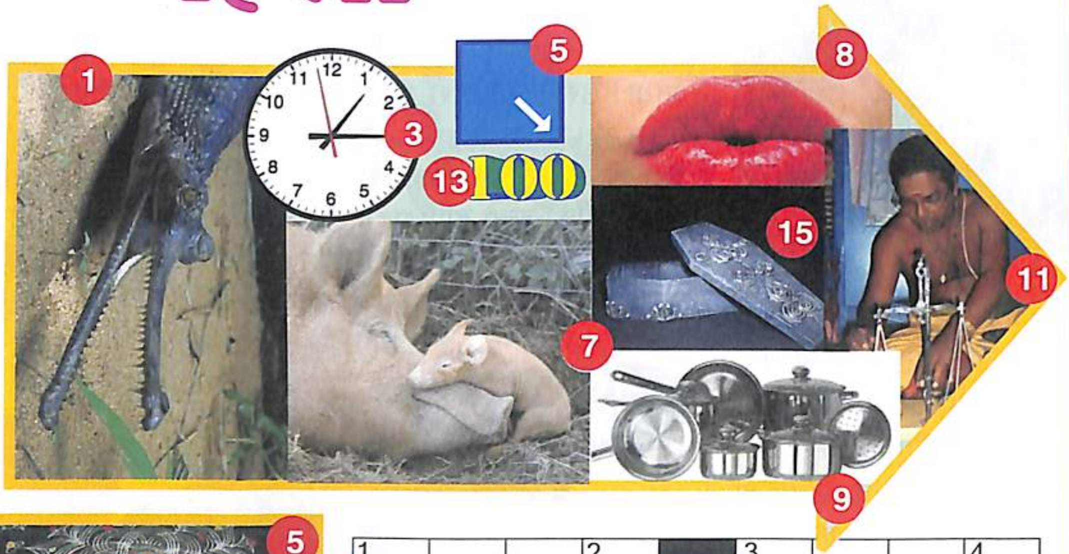

1			2	■	3			4
	■	■		■		■	5	
■	6	■	7			■	8	
9		10		■	11	12		■
	■		■	13	■		■	14
■	15		16	■	17		18	
19	■	20				■		■
21		■	22	■	23			24
	■	25		■		■	26	

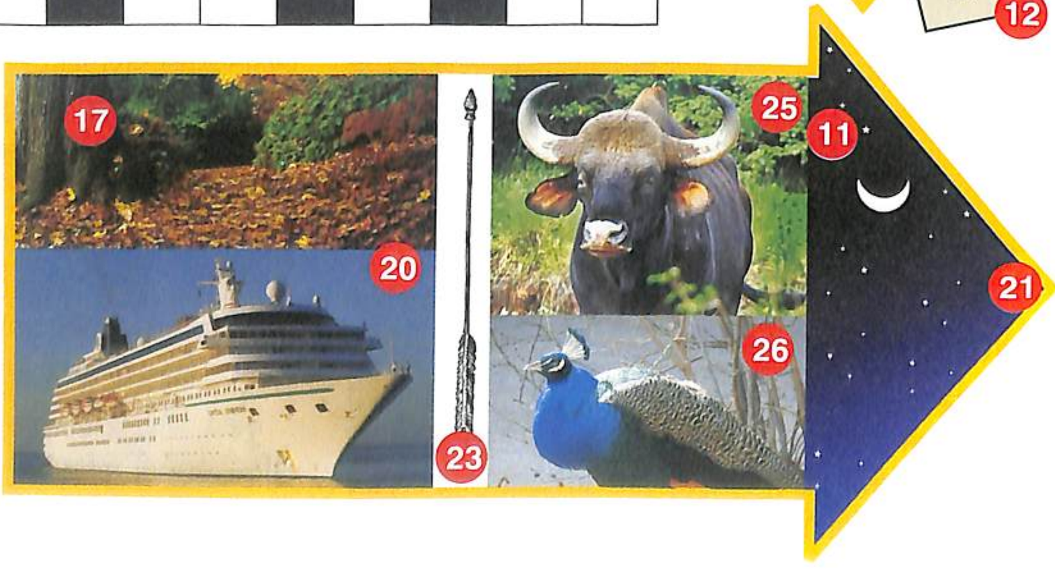

तीन कवितायें

जड़ें

जड़ें मत खोदो
वे बहुत शरमाती हैं
इतनी पानीदार
कि मारे शरम के
पाताल लोक तक
चली जाती हैं।

ध्रुव शुक्ल

कव्वा उतरा है मुँडेर पर

कव्वा उतरा है मुँडेर पर
और कन्धे पर नाना
एक-दूसरे में दोनों ने
जाने क्या पहचाना।

गर्दन घुमा-घुमा कव्वे को
देख रहा है नाना
कौन आ गया है यह मुझसा
दाना और सयाना।

गर्दन घुमा-घुमा कर कागा
काँव-काँव करता है
हिला-हिला सिर अपना यह भी
हाँव-हाँव भरता है।

एक-दूसरे को बढ़-चढ़कर
दोनों दाँव दिखाएँ
कौन नकल करता अब किसकी
कैसे हम बतलाएँ?

रमेशचंद्र शाह

ज्योतिषी

एक ज्योतिषी सड़क किनारे
पोथी को फैलाकर,
बता रहे थे भाग्य किसी का
ज्योतिष गणित लगाकर।

"अगले वर्ष तुम्हारे घर में
दो बच्चे खेलेंगे,
इसी माह में केतु उदय है
राहु अस्त हो लेंगे।"

"दस दिन में कुनबे का कोई
खो भी जा सकता है,
पर शनि के प्रभाव से घर भी
वापिस आ सकता है।"

तभी एक लड़के ने आकर
कहा ज्योतिषी जी से,
"पुत्र तुम्हारा गिरा कुएँ में
उठो, चलो जल्दी से।"

भाग्य पूछने वालों के सिर
यह सुनकर चकराए,
कैसी ज्योतिष विद्या लेकर
ये पंडित जी आए?

अपने बेटे के भविष्य का
जिनको पता नहीं था,
भाग्य-भविष्य दूसरों का वे
बतला सकते हैं क्या?

निरंकारदेव सेवक

दिलीप चिंचालकर

बुखार में पृथ्वी

कुछ अटपटा लग रहा है। मैं खिड़की से अपने दोस्त का घर नहीं देख पा रहा हूँ। उसका घर बगीचे में खड़े काकंबीर (नीम-पीपल के ऊँचे-ऊँचे पेड़ जिन पर कौवे घोंसला बनाते हैं) की सबसे ऊपर वाली शाख पर है। नीम का यह पेड़ पूरे साल पत्तियों से ढँका रहता है। उस वक्त मैं अपने दोस्त और उसकी पत्नी को उनके घोंसले में केवल आते-जाते ही देख सकता हूँ। गर्मियों में उनके बच्चों की काँव-काँव सुन सकता हूँ। परन्तु घोंसला पतझड़ में ही दिखाई देता है।

इस वर्ष नीम के सारे पत्ते झरे नहीं हैं और नई कोंपलें फूटना शुरू भी हो गया है। पत्ते पेड़ पर बने रहेंगे तो उसे आराम करने की सालाना छुट्टी नहीं मिलेगी। पत्तियों ने धूप रोक ली तो नीचे क्यारियों में लगे पौधों पर मौसमी फूल नहीं खिलेंगे। क्योंकि लाल-पीले-जामुनी सारे रंगों को बनने के लिए धूप की आवश्यकता होती है। फूल नहीं खिलेंगे तो तितलियाँ और भौरे नहीं आएँगे। तब तो नए बीज भी नहीं बनेंगे। फिर चिड़ियाँ क्या खाएँगी? दूसरी ओर नौलक्खा में प्रभु जोशी जी के घर के गुलमोहर में दिसम्बर में ही फूल आने लगे हैं। प्रकृति में सारी बातों का एक सिलसिला लगा रहता है। उन सबके होने का समय, तापमान, आकाश से पानी का गिरना तय होता है। यह प्रभु की नहीं प्रकृति की माया है।

हो सकता है पृथ्वी के वातावरण में गर्मी बढ़ने से यहाँ-वहाँ ऐसी अजीब घटनाएँ हो रही हों। दुनियाभर के लोग मिलकर हर वर्ष 10 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड गैस वातावरण में उड़ेल देते हैं। इसमें सबसे ज़्यादा (2.5 करोड़ टन के आसपास) गैस अकेला अमरीका छोड़ता है। कम ही सही, लेकिन हम भारतीय भी इसमें शामिल हैं। सन् 1997 में 36 प्रगत देशों ने क्योटो (जापान) में मिलकर तय किया था कि सन् 2012 तक सब अपनी ग्रीन हाऊस गैसों को इतना कम कर लेंगे कि सन् 1990 में जितनी कार्बन डाईऑक्साइड वातावरण में थी उससे भी 5 प्रतिशत नीचे हो जाएगी। इस संकल्प को "क्योटो प्रोटोकोल" नाम दिया गया था। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। उल्टे सन् 1990 से 2005 के बीच कार्बन डाई ऑक्साइड का मात्रा और ज़्यादा हो गई। यह स्थिति इतनी खराब है कि अगले दस वर्षों में मारे गर्मी के दोनों ध्रुवों पर जमा सारी बर्फ पिघल सकती है।

इसलिए युरोप के सारे देश कह रहे थे कि अब तो कार्बन डाई ऑक्साइड का स्तर 25 से 40 प्रतिशत नीचे लाए बगैर काम नहीं चलेगा। अगर आज इसी क्षण कार्बन डाई ऑक्साइड उगलने वाले यंत्र-संयंत्र बन्द भी कर दें तो भी इस शताब्दी भर तक उसका असर बना रहेगा। सिर्फ अमरीका और उसके साथी देश कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, चीन वगैरह इसके लिए तैयार नहीं हैं। यही तय करने के लिए 190 देश अभी बाली में एकत्रित हुए थे और बिना खास कुछ किए वापिस चले गए। और तो और, बाली पहुँचने वाले 15 हज़ार लोग अपने पीछे 60 हज़ार से एक लाख टन कार्बन डाईऑक्साइड और छोड़ गए हैं। चकमक

खुशहाल रहे एन फ्रैंक का पेड़

एन फ्रैंक ट्री

लगभग हर सुबह जब अपने फेफड़ों से दम घोंटने वाली हवा को निकाल बाहर करने के लिए मैं अटारी पर जाती हूँ, फर्श पर अपनी पसन्दीदा जगह पर खड़े होकर मैं नीले आकाश और बेपत्ता चेस्टनट वृक्ष की ओर देखती हूँ जिसकी टहनी पर जमी वर्षा की बूँदें चाँदी-सी चमकती हैं, सीगल और दूसरे पक्षी हवा में तैरते हैं। जब तक यह इसी तरह बना रहेगा, मैं सोचती हूँ, मैं इसे देखने के लिए जीवित हूँगी, ये धूप, यह आकाश, जब तक यह रहेगा, मैं दुखी नहीं होऊँगी।

एन फ्रैंक ने ऐसा 23 फरवरी 1944 को अपनी डायरी में लिखा था। यह पेड़ उसके तिमंज़िला घर के पिछवाड़े लगा था जिसमें एन और उसके परिवार ने 25 महीने नात्सियों से डरते-छुपते गुज़ारे थे। दूसरे महायुद्ध के उन दिनों में हिटलर के सैनिकों के डर का आलम यों था कि उसके जैसी बातूनी लड़की न तो बात कर सकती थी न बाथरूम का फ्लश चला सकती थी। घर की तमाम खिड़कियाँ गत्ते से बन्दकर दी गई थीं। आप सोच सकते हैं कि एक खिड़की से दिखाई देने वाले पेड़ ने एन को कितना सुकून दिया होगा।

पिछले 21 नवम्बर को यह पेड़ काट डाला जाने वाला था। कारण इसकी बीमार हालत। 150 से 170 वर्ष पुराना यह पेड़ सन् 1993 से लगातार फफूँद और खोखला करने वाले कीड़ों से जूझ रहा है। एम्सटर्डम नगर पालिका को डर था कि 27 टन वजनी यह पेड़ यदि गिरा तो लोग दब सकते हैं और पास ही में बने एन फ्रैंक संग्रहालय (जिसमें एन छुपी थी) को भी नुकसान पहुँच सकता है। एन के शहर में ऐसे बहुत लोग निकल आए जिन्होंने इस पेड़ को काटने का विरोध किया। जिनके अहाते में यह पेड़ खड़ा है उन हेनरिक पोमेक ने कहा कि मैं तो पेड़ काटकर रहूँगा। एन फ्रैंक संग्रहालय के निदेशक हांस वेस्त्रा ने कहा कि पेड़ गिरने से संग्रहालय को नुकसान पहुँचा तो वे हैनरिक पर मुकदमा करेंगे। मामला अदालत में गया। जज जर्जन बेड दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद खुद पेड़ देखने गए। वहाँ उन्होंने पेड़ पर टक-टक कर उससे बात की। एक इंजीनियरिंग कम्पनी ने मशीन से पेड़ के साथ खींचा-तानी करके सिद्ध कर दिया कि कुछ वर्ष तक तो पेड़ अपनी जगह खड़ा रहेगा। न्यायालय लौटकर जज साहब ने कह दिया कि पेड़ नहीं कटेगा। हर वर्ष लाखों लोग एन फ्रैंक संग्रहालय देखने आते हैं। "एन फ्रैंक ट्री" बच्चों में आपस में बातचीत शुरू करने वाले एक प्रोजेक्ट का भी नाम है। बच्चे इस पेड़ के नीचे गिरी हुई पत्ती पर अपना नाम लिख कर एन के लिए अपना स्नेह जताते हैं। दुनिया भर के 200 से ज़्यादा स्कूलों के बच्चों ने ऑन लाइन अपने नाम यहाँ दर्ज कराए हैं। एन के पिता ने एन का लिखा पढ़कर कहा था कि उन्हें कैसे पता हो सकता था कि यह नज़ारा एन को सबसे ज़्यादा खुशी और जीने की प्रेरणा दे सकता है? वह तो कभी पेड़-पौधों में रुचि ही नहीं लेती थी। लेकिन पिंजरे में बन्द पक्षी जैसी हालत ने उसे प्रकृति से प्रेम करना सिखा दिया। प्रकृति से प्रेम करने के लिए क्या हमें पृथ्वी के कैदखाना बनने का इन्तज़ार है? बगीचे की यह खिड़की एन फ्रैंक के कमरे की ही खिड़की है और उससे दिखाई देता पेड़ एन फ्रैंक का पेड़ है।

एन फ्रैंक की यह डायरी अब हिन्दी में भी उपलब्ध है।

एक किशोरी की डायरी नाम से यह किताब राजकमल प्रकाशन ने छापी है। इसकी कीमत डेढ़ सौ रुपए है। इसे मँगाने के लिए तुम इस पते पर लिख सकते हो:

राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग
नई दिल्ली - 110002

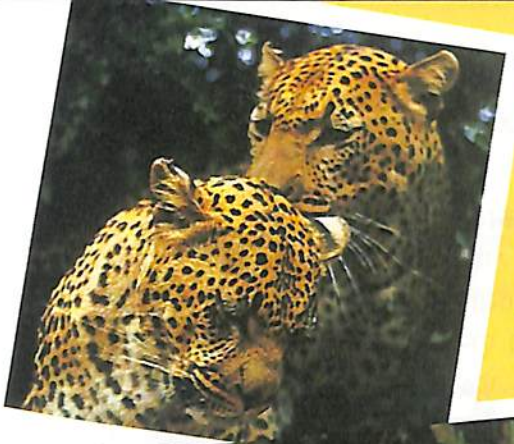

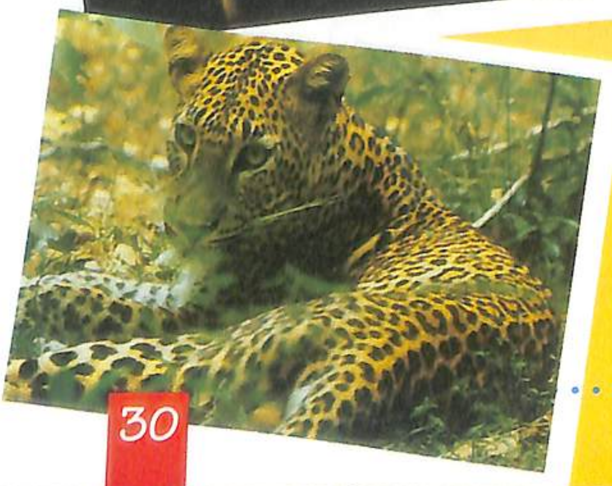

शाश्वत गोपाल

खट्टी-मिट्ठी चिट्ठी

प्यारी-प्यारी सिया और सारा,

पिछले सोमवार मैं तुम्हें एक कहानी सुनाना भूल गया। एक सच्ची कहानी।

कोई डेढ़ साल पहले जंगल से दो तेन्दुए एक शहर आए। शहर क्या, सीधे राजधानी रायपुर ही पहुँच गए। मालगाड़ी से। पक्के-पुराने, टूटे-फूटे घरों, झाड़ियों में रहे। शहर के जानवरों को खाया और पता नहीं कहाँ-कहाँ घूमे। शहर सोता था तब वे घूमते थे – रात में।

ठण्ड के दिन थे। जनवरी के आखिरी दिन। शाम का समय था। रायपुर के वैगन रिपेयर वर्कशॉप के कुछ लोगों ने एक दिन एक तेन्दुए को घूमते देखा। अपने देखे पर उन को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने यह बात और लोगों को बताई। उनकी तरह लोगों को भी तेन्दुए के देखे जाने की बात पर विश्वास नहीं हुआ।

इसी तरह कुछ दिन बीत गए। एक दिन एक महिला ने तेन्दुए को देखा। तेन्दुआ तब वैगन रिपेयर वर्कशॉप के एक खण्डहर में आराम कर रहा था। उस महिला ने अन्य लोगों को यह बात बताई। लेकिन पहले की तरह लोगों ने उसकी भी बात पर विश्वास नहीं किया। करते भी कैसे? शहर में तेन्दुआ थोड़े ही रहता है।

धीरे-धीरे लोगों को याद आया कि पिछले करीब एक साल से लोगों के पालतू जानवर, सड़क के आवारा कुत्ते अचानक गायब होते जा रहे हैं। लोगों ने शहर के कलेक्टर को बताया। फिर क्या था! उसने वन विभाग को आदेश दिया कि जाओ और देखो कौन राज्य की सीमा में घुस आया है। चार बड़े-बड़े पिंजरों के साथ वन विभाग के गार्ड पहुँच गए वैगन रिपेयर वर्कशॉप। कुछ दिनों की छुपा-छुपाई के बाद एक दिन तेन्दुआ नाली के बड़े पाइप में घुस गया। लोग बजाने लगे नगाड़े ढम ढमा ढम ढम......। फिर पाइप के एक ओर पिंजरा लगाया गया और दूसरी ओर से आग जलाई गई। आग से डर कर तेन्दुआ दूसरी ओर लगे पिंजरे में घुस गया। धड़ाक से आवाज़ आई और पिंजरे में तेन्दुआ बन्द हो गया। खूब भीड़ लगी तेन्दुए को देखने।

लोग खुश थे कि जंगल के "छोटे राजा" पकड़ाई में आ गए – बड़े राजा तो शेर हैं। लोगों ने शहर के कलेक्टर को बधाई दी। वो महिला और वे लोग भी खुश थे जिन्होंने तेन्दुए को पहली बार देखा था। पिंजरे में बन्द तेन्दुए की अखबारों में खूब तस्वीरें छपीं। लेकिन सभी तस्वीरें तेन्दुए ने गुस्से में खिंचवाईं।

आसपास फिर शान्ति का माहौल हो गया। बच्चे घर के बाहर खेलने लगे। लोग अपने-अपने काम खत्म करने के बाद घर अकेले भी लौटने लगे।

एक दिन अचानक एक बकरी मरी हुई मिली। उसकी गर्दन में छेद थे। लोगों ने अकेले बाहर जाना बन्द कर दिया। घरों के खिड़की-दरवाज़े बन्द रहने लगे। लोग फिर सतर्क हुए और सोचा कि कहीं शहर के पड़ोस में जंगल तो नहीं आ गया? जंगल शहर के पड़ोस में नहीं आता सिया, शहर जंगल के पास चले जाते हैं। शहर बढ़ता है तो जंगल घटता है। जब तुम दोनों बड़ी होगी तब तक तो पता नहीं कितनी दूर का जंगल घटकर शहर बन चुका होगा? बकरी के मरने के बाद लोग सोच रहे थे कि तेन्दुए को तो वे करीब 135

किलोमीटर दूर स्थित बारनवापारा के जंगल में छोड़ आए थे, वह फिर कैसे लौट आया? इस तरह कुछ दिन और बीत गए। कोई घटना नहीं घटी।

कुछ दिनों बाद मालगाड़ी के ड्राइवर ने इंजन की खिड़की की सलाखों के पीछे से देखा। वैगन रिपेयर वर्कशॉप के पास एक तेन्दुआ और उसके दो बच्चे झाड़ियों के पीछे रेलगाड़ी की आवाज़ से डरकर छुप रहे थे। ड्राइवर ने तुरन्त इसकी सूचना वन विभाग को दी।

फिर से वैगन रिपेयर वर्कशॉप के आसपास पिंजरे लगाए गए। इस बार एक जाँच दल भी बनाया गया जो जाँचेगा कि जंगल के निवासी यहाँ कैसे आए। अन्दाज़ लगाया गया कि दो तेन्दुए, एक नर और एक मादा, किसी मालगाड़ी से वैगन रिपेयर वर्कशॉप करीब एक-डेढ़ साल पहले पहुँचे होंगे। हुआ यह होगा कि मालगाड़ी जंगल में कुछ देर के लिए खड़ी रही होगी। कभी-कभी लाइन न मिलने के कारण गाड़ियाँ जंगल में खड़ी रह जाती हैं। गाड़ियों में सामान के अलावा कई बार गाय, भैंस, बकरी आदि पालतू जानवर एक जगह से दूसरी जगह ले जाए जाते हैं। इन्हीं जानवरों की गन्ध की वजह से दोनों तेन्दुए रुकी हुई मालगाड़ी के पास आए होंगे और इन्हें खाने के लालच में मालगाड़ी के खुले डिब्बे में सवार हो गए होंगे।

एक लम्बे सफर के बाद जब ट्रेन रायपुर के वैगन रिपेयर वर्कशॉप के पास पहुँची होगी तो ये दोनों वहाँ की झाड़ियों को जंगल समझकर उतर गए होंगे। तेन्दुए के बच्चे इतने छोटे हैं कि वो ट्रेन में खुद तो चढ़ नहीं सकते। इसलिए वन विभाग के अधिकारियों का मानना है कि इन बच्चों का जन्म यहीं हुआ होगा। सिया, तुम्हारे जन्म प्रमाण-पत्र की तरह उनका जन्म प्रमाण-पत्र रायपुर नगर निगम से ही बनेगा। अब दोनों बच्चे अपनी माँ के साथ शहर में घूमते हैं। कभी-कभी एक ही रात में 10-15 किलोमीटर तक घूम आते हैं।

इतने महीनों से तेन्दुए का यह परिवार वैगन रिपेयर वर्कशॉप में रह रहा था। लेकिन नर तेन्दुए के पकड़े जाने के बाद वो अपना घर बदलने लगे हैं। एक दिन दोनों बच्चे अपनी माँ के साथ वैगन वर्कशॉप से बहुत दूर छत्तीसगढ़ विधानसभा के पीछे के खेतों में दिखाई दिए, जहाँ रात को एक महिला ने कुएँ से पानी भरते समय उन्हें झाड़ियों के पीछे छुपते देखा। परसों वे कृषि विश्वविद्यालय कैम्पस में बने घरों के पास दिखाई दिए। वहाँ कुछ लोगों ने रात को करीब 10 बजे एक कुत्ते जैसे जीव और दो बच्चों को सोए देखा। उन्होंने आपस में बात की कि कुत्ता ऐसा तो नहीं दिखता। तुरन्त टॉर्च लाई गई। तब तक तीनों सो रहे थे। क्या करें, छुपते-छुपते थक गए होंगे। जैसे ही टॉर्च जली तेन्दुए के बच्चों की माँ ने कहा गुर्र, गुर्र.....हमें सोने दो। फिर क्या था। न तीनों तेन्दुए सोए न सैकड़ों लोग। वहाँ से तीनों फिर भाग गए। वन विभाग का पिंजरा अब कृषि विश्वविद्यालय के आसपास लगाया गया है।

लोग अब फिर अकेले घर नहीं जाते। तीनों के पैरों के निशान जगह-जगह दिखाई देते हैं। कभी एक मोहल्ले में तो कभी दूसरे मोहल्ले में। वन विभाग और तीनों की छुपा-छुपाई करीब तीन महीनों से चल रही है। वन विभाग के अधिकारी और तेन्दुए जब एक-दूसरे को देखते हैं तो दोनों ही डर जाते हैं।

सारा और सिया, जब हम शहर से दूर जंगल जाते हैं तब भी ये जानवर हमसे परेशान होते हैं। जंगल के ये खूँखार जीव अच्छे हैं। सच में बहुत अच्छे, लेकिन क्या करें गलत स्टेशन में उतर गए, वो भी बिना रिटर्न टिकट।

कहानी अभी खत्म नहीं हुई। आगे की कहानी जल्द ही सुनाऊँगा।

तुम्हारा मामा

शाश्वत गोपाल

उमा सुधीर

कितनी है हवा में ऑक्सीजन...

हमारे वायुमण्डल में लगभग 20 प्रतिशत ऑक्सीजन होती है – इस बात को दिखाने के लिए विज्ञान की स्कूली किताबों में एक प्रयोग अकसर दिया जाता है। इस प्रयोग में एक मोमबत्ती को एक तश्तरी में रखा जाता है और फिर उसमें पानी भरा जाता है। इसके बाद मोमबत्ती को जलाकर उसे एकदम से एक बीकर से ढँक दिया जाता है (अच्छा हो अगर बीकर पर पैमाना बना हो)। मोमबत्ती कुछ देर जलकर बुझ जाती है। साथ ही बीकर में पानी का स्तर थोड़ा बढ़ जाता है। पैमाने से पता चलता है कि बीकर के अन्दर की हवा का आयतन लगभग 1/5 कम हो गया है। किताबों के अनुसार पानी का ऊपर चढ़ना ऑक्सीजन का खर्च होना दर्शाता है। यानी जितनी ऑक्सीजन जलने में खर्च हुई उतना आयतन पानी घेर लेता है।

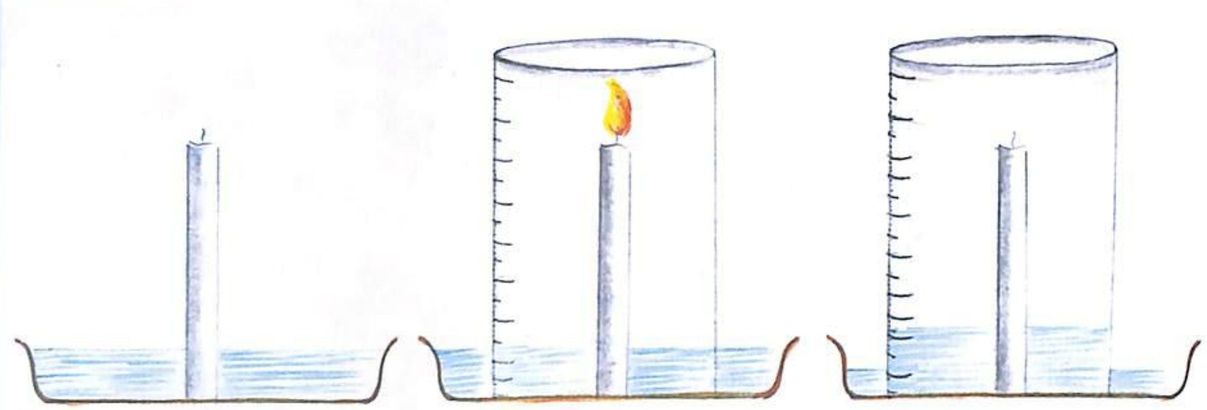

अगर इस प्रयोग से हमें सही में हवा में ऑक्सीजन की मात्रा पता चलती है तो ज़रा सोचो कि अगर इस प्रयोग में एक की जगह तीन मोमबत्तियों का प्रयोग करें तो क्या होगा?

क्यों न खुद प्रयोग करके देखो? अगर जल-स्तर में बढ़ोतरी की वजह केवल 20 फीसदी ऑक्सीजन का खर्च होना है तो फिर ऐसा तो हर स्थिति में होना चाहिए। फिर चाहे बीकर के अन्दर एक मोमबत्ती हो, तीन हों या पचास मोमबत्तियाँ हों। लेकिन क्या प्रयोग का नतीजा भी यही बताता है? हाँ, यह अलग बात है कि जितनी ज़्यादा मोमबत्तियाँ होंगी वो जगह भी उतनी ज़्यादा घेरेंगी।

आओ एक प्रयोग से इस पहेली को हल करने की कोशिश करें। फिर से एक मोमबत्ती वाले प्रयोग को दोहराते हैं। अब सावधानी से नोट करें कि जल-स्तर कब बढ़ रहा है – मोमबत्ती जलने के साथ या उसके बुझने के तत्काल बाद।

ज़रा तह में जाकर पता करने की कोशिश करते हैं। पहले की तरह एक मोमबत्ती को तश्तरी में रखो, उसमें पानी डालो, मोमबत्ती जलाओ, बीकर को मोमबत्ती के ऊपर कुछ देर गर्म करने के बाद बीकर को उलटा रख दो। ध्यान से देखो कि क्या जैसे-जैसे ऑक्सीजन खर्च होती जाती है वैसे-वैसे बीकर में पानी का

स्तर बढ़ता जाता है या मोमबत्ती के बुझते ही या बुझने के थोड़ी देर बाद पानी का स्तर बढ़ता है? यह भी देखो कि क्या इस बार जल-स्तर में कुछ अन्तर आया।

यहाँ स्कूली किताबों में दिए जाने वाले प्रयोग में कुछ बदलाव किया गया है। इससे पता चलता है कि जल-स्तर में बढ़ोतरी की वजह तो कुछ और ही है। मोमबत्ती के जलने से वायु गर्म होकर फैलती है, और ठण्डी होते ही उसमें संकुचन आता है। जितनी ज़्यादा हवा गर्म होगी (यानी जितनी अधिक मोमबत्तियाँ जलाई जाएँगी या जितनी ज़्यादा देर के लिए हवा गरम की जाएगी), शुरू में उसमें फैलाव उतना ही ज़्यादा होगा। बीकर के मुँह से बुलबुलों के रूप में हवा के निकलने को देखा जा सकता है। गर्म हवा के ठण्डी और संकुचित होते ही जल-स्तर में बढ़ोतरी होगी।

इसलिए कहना होगा कि जल-स्तर में बढ़ोतरी के आम स्कूली प्रयोग में कहीं न कहीं गलती है। इस प्रयोग में कहा गया है कि खर्च हुई ऑक्सीजन का स्थान लेने के लिए पानी के स्तर में बढ़ोतरी होती है। लेकिन ऐसा कहते समय एक मुख्य तथ्य को भुला दिया जाता है। वो यह कि जब कार्बन को जलाया जाता है तो कार्बन डाइऑक्साइड उत्पन्न होती है। और बाकी कार्बन डाइऑक्साइड जलने की वजह से खत्म हो रही ऑक्सीजन का स्थान ले लेती है। कार्बन डाइऑक्साइड की कुछ मात्रा बीकर के पानी द्वारा भी सोख ली जाएगी। (देखें बॉक्स)

खैर, अब अगर हमें यह पता करना हो कि हवा में कितनी ऑक्सीजन है तो हमें एक ऐसा सिस्टम चाहिए जिसमें बीकर से न तो हवा निकल सके और न ही और हवा उसके अन्दर जा सके। हवा का बाहर और अन्दर का दाब भी बराबर होना चाहिए। साथ ही कुछ ऐसे भी पदार्थ हों जो उत्पन्न हुई कार्बन डाइऑक्साइड को या तो सोख लें या उनके साथ क्रिया कर लें। क्या तुम पता कर सकते हो कि ऐसे कौन-कौन से पदार्थ हैं? ऐसे में हमें कुछ ऐसे सेट-अप की ज़रूरत पड़ेगी:

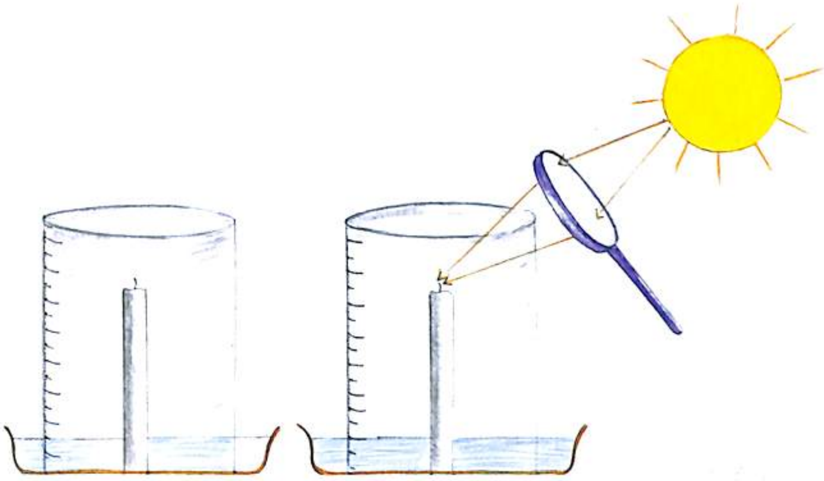

यानी हमें सबसे पहले एक तश्तरी में पानी भरकर उसमें एक मोमबत्ती रखनी होगी और फिर बीकर को अच्छी तरह ढँक देना होगा। चूँकि हमें बीकर में आवाजाही को खत्म करना है इसलिए हमें मोमबत्ती को बाहर से जलाना होगा। अब भला ऐसा कैसे करेंगे? तो इसके लिए हम सूर्य की रोशनी का इस्तेमाल करेंगे। मोमबत्ती जलाने के लिए हम कॉन्वेक्स लैंस का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसे बोलचाल की भाषा में बिल्लौरी काँच भी कहा जाता है जो सूर्य किसी भी प्रकाश को एक जगह केन्द्रित कर सकता है। इस काँच की मदद से हम सूरज की रोशनी को मोमबत्ती की बत्ती पर केन्द्रित करेंगे। थोड़ी ही देर में वह बत्ती जलने लगेगी। हमें बीकर के अन्दर कुछ ऐसे पदार्थ रखने होंगे जो तुरन्त कार्बन डाइऑक्साइड को सोख सकें, ताकि वह खत्म होने वाली ऑक्सीजन का स्थान न ले सके। बीकर के अन्दर और बाहर हवा का दाब बराबर करने का भी कोई तरीका सोचना होगा।

अगर हम सब कर पाए तो हमें ठीक-ठीक पता चल सकेगा कि हवा में वास्तव में कितनी ऑक्सीजन है।

जब किसी कार्बनयुक्त पदार्थ को जलाया जाता है तो कार्बन डाइऑक्साइड बनती है। मोम हाइड्रोजन और कार्बन के यौगिकों का मिश्रण है। ऐसे में जब मोम (मोमबत्ती) को जलाया जाता है तो उससे कार्बन डाइऑक्साइड और पानी भी बनता है। हाइड्रोजन और कार्बन के यौगिकों के जलने से बनी कार्बन डाइऑक्साइड खर्च हुई ऑक्सीजन से कम होगी। क्योंकि कुछ ऑक्सीजन का इस्तेमाल पानी बनने में भी होगा। यहाँ हम मान कर चल रहे हैं कि मोम पूरी तरह से जल रही है। जबकि आमतौर पर पूरा दहन नहीं होता है इसलिए मोमबत्ती से काला धुआँ निकलता है।

माथा पच्ची

मेरे पास चवन्नी-अठन्नी का एक ढेर है। तुम इसमें से तीन रुपए ले सकते हो। हाँ, पर ढेर में से तुम नौ सिक्के ही निकाल सकते हो। बताओ इन नौ सिक्कों में कितनी चवन्नियाँ और कितनी अठन्नियाँ होंगी?

नौ सिक्कों को
तीन पंक्ति में
ऐसे रक्खो भाई
हर पंक्ति में चार-चार
सिक्के पड़ते दिखलाई।

चौकोर में चौकोर

शतरंज के इस बोर्ड में कुल कितने चौकोर हैं?

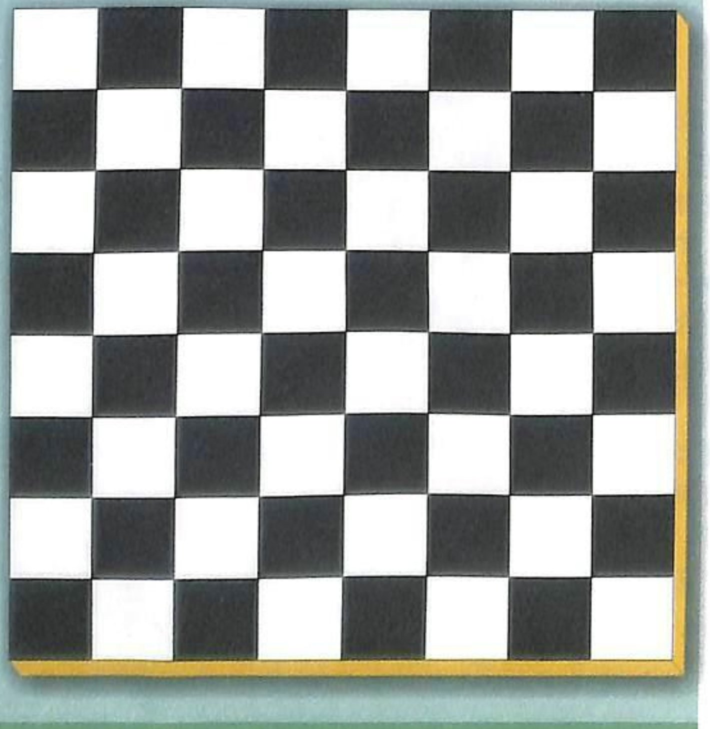

उलझन

दसवीं की परीक्षा अगले महीने शुरू होने वाली है। तुम्हारे चार दोस्त आकर कहते हैं, "अपने को पेपर मिल सकते हैं। ट्यूशन वाले दत्ता साब कह रहे हैं कि वे इन्तज़ाम कर देंगे।"

"कितना लगेगा," तुम पूछते हो।

"डेढ़ हज़ार।"

"और पकड़े गए तो? हमारा नाम कट जाएगा। माता-पिता तो मुझे घर से निकाल देंगे।" तुम्हें थोड़ी बेचैनी होती है। "और यह तो चोरी है। उन लोगों का क्या होगा जिन्हें पेपर नहीं मिलेंगे?"

"अरे कुछ नहीं होगा यार," वे लोग तुम्हें समझाते हैं। "अरे यार, सभी लोग ऐसा करते हैं। आजकल यही चलता है।"

"और यह कितनी फालतू की परीक्षा है। इसमें तुम्हारी अकल की जाँच तो होती नहीं। बस, रटो और उगलो। सोचो, रिज़ल्ट अच्छा रहा तो अपनी पसन्द के कोर्स में जा सकेंगे।"

"बाकी लोगों को भूल जाओ, अपनी फिक्र करो। आखिर यह तुम्हारे भविष्य का सवाल है।"

तुम उलझन में हो। उनकी बातें भी सही लगती हैं। पर कुछ ठीक भी नहीं लगता। तुम्हें क्या करना चाहिए? तुम क्या करोगे? कारण सहित बताओ।

चुनिन्दा जवाबों को आकर्षक इनाम दिए जाएँगे।

एक राह जो हमने चुनी

ऐसा राष्ट्र बनाने की जिसमें सब बराबर हों,
सबके लिए न्याय हो, आज़ाद हों सब और
भाईचारा हो सबके बीच।
हमारा संविधान इन मूल्यों की रक्षा करता है।

गणतंत्र दिवस के

इस अवसर पर इन मूल्यों की
रक्षा का संकल्प लें हम।

यह, हमारे संविधान में निहित समता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व के मूल्यों को जीने का पर्व है। निरंतर इन मूल्यों की रक्षा ही राष्ट्र का आधार मजबूत करेगा।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

गणतंत्र के 58 वें वर्ष में
गणतांत्रिक मूल्यों के साथ
मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D - 66348 दिनांक 11-01-2008 म.प्र. जनसम्पर्क/माध्यम/2008

विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (III)

"दूसरा ग्राहक हाथी था," भैरा ने कहा।

"हाथी!" कूना ज़ोर से चीखी।

"हाथी की प्याली तो बहुत बड़ी होगी।" बोलू चलकर कूना के पास जाकर खड़ा हो गया। बोलू को पास आया देखकर उसने बोलू का हाथ पकड़ा और कहा, "बोलू तू बोलना मत। नहीं तो मेरे पास से चला जाएगा।"

"नहीं बोलूँगा," बोलकर बोलू प्रेम के पास चला गया। तब कूना बोलू के पास जाकर फिर से खड़ी हो गई।

"हाथी की प्याली बालटी के बराबर होगी?" प्रेमू ने पूछा।

"वही छोटी प्याली। प्याली भरकर भी नहीं। पिताजी कहते हैं प्याली भरा मत करो। तश्तरी में चाय गिरनी नहीं चाहिए," भैरा ने कहा।

"शेर नहीं आता चाय पीने?" कूना ने बोलू का हाथ पकड़े-पकड़े पूछा।

"शेर नहीं आता। शेर से हाथी भी डरता है। शेर क्यों आएगा? मेरे पिता केटली में तीन-चार कप चाय लेकर शेर को देने जाते हैं। शेर अपनी गुफा में चाय पीता होगा। जब पिता लौटकर आते हैं तो बहुत खुश रहते हैं। जाते समय खुश नहीं रहते।" भैरा बोलू की तरह बोलते हुए चल रहा था। भैरा को सुनते हुए सब उसके साथ चल रहे थे। कूना भी बोलू का हाथ छोड़कर चल पड़ी थी। बोलू चुपचाप खड़ा रह गया था।

"शेर से जान बच गई इसलिए खुश होते होंगे," बोलू ने भैरा के पास जाते हुए कहा। कूना ने प्रेमू को हटाकर बोलू के पास खड़े होने के लिए जगह बनाई और कहा, "सच बात है।"

"तुम चाय पीते हो?" बीनू ने भैरा से पूछा।

"पिता जी मना करते हैं।"

"दूध के लिए होटल में कितनी गाय हैं?" प्रेमू ने पूछा।

"हमारे बाप-दादों ने भी गाय नहीं पाली।"

"चाय के लिए दूध कहाँ से लाते हो?" बोलू ने पूछा। बोलू की कमीज़ पीछे से पकड़े बोलू के साथ कूना भी चल रही थी। बोलू रुका तो कूना भी रुक गई।

"जंगली भैंसी को दुहकर दूध लाते हैं," भैरा ने कुछ ज़ोर से सबसे कहा।

"क्या कहा?" बोलू ने दुबारा सुनने के लिए कहा। कहते ही बोलू झटके से बढ़ा। और कूना गिर पड़ी। पर कूना रोई नहीं। "क्या जंगली भैंसी ने दूध दुहने दिया?" यह प्रश्न सबके मन में उठा था। पर किसी ने पूछा नहीं था। परन्तु भैरा ने उत्तर दिया शेर के लिए जब चाय बननी है तो डरकर जंगली भैंसी तैयार हो गई।

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी में एक बूढ़े और एक बूढ़ी रहते थे। अँधेरा होते ही चन्द्रमा झोपड़ी की हरी घास के छप्पर से दुबका हुआ निकलता था। कोई पूछे कि चन्द्रमा कहाँ रहता है तो उसका पता हरी घास का छप्पर होता। यह पता सभी बच्चों को मालूम था। हरी घास के परदे की आड़ में चन्द्रमा छुपा हुआ सबको दिखता था। यह शीतल फुरहरी का दृश्य होता। देखने से लगता हवा में कँपकँपी है। हरी घास भी काँपती है। हरी घास जिस तरह काँपती देखने वाले उसी तरह सिहरते। रात में भी हरी घास चन्द्रमा के उजाले में हरी दिखती। सुबह जब सूर्य हरी घास के पीछे से निकलता तो छोटी-बड़ी घास की नोंकों पर ओस की बूँदें रंगीन चमकतीं। प्रायः बच्चों के मन में आता कि हरी घास की छप्पर से चन्द्रमा को छुआ जा सकता है और इन्द्रधनुष को लाया जा सकता है। सुबह सूर्य का प्रकाश हरी घास के हरे में भिदा हुआ उज्जवल दिखाई देता। चन्द्रमा और सूर्य के कारण हरी घास की झोपड़ी को देखो तो लगता कि झोपड़ी में बूढ़े और बूढ़ी युगों से दिन-रात रह रहे हैं। और सूर्योदय तथा सूर्यास्त का उत्सव उन्हीं की झोपड़ी में होता होगा जो कई सुबहों और साँझों को अच्छे से जी चुके होते हैं। अगला दिन जीवन के उत्सव को पिछले दिनों से सबसे आगे होकर देखता है।

बस्ती की प्रत्येक झोपड़ी में सूर्य और चन्द्रमा का निकलना अलग-अलग तरह से सुन्दर था। दिन का हीरा होकर सूर्य बस्ती में दिन भर चमकता और रात का पुखराज होकर चन्द्रमा। बस्ती के सभी छप्परों पर

तारे बिखरे पड़े हुए चमकते। बस्ती का दृश्य हर दिन सुन्दर दृश्यों की प्रतिद्वन्द्विता में पहले से ज़्यादा सुन्दर होता।

कक्षा में बच्चों का मन होता तो आलों में भी बैठ जाते। जब सभी बच्चे कक्षा में उपस्थित होते तो बहुत-से आलों में बैठे होते। कुछ आले इतने बड़े थे कि भैरा जितना बड़ा लड़का उसमें बैठ जाता। बच्चे आलों में या तो नीचे पैर लटकाकर बैठते और किताब, स्लेट घुटनों पर रख लेते या पालथी मोड़कर बैठ जाते और गोद में किताब रख लेते। सभी बच्चे नहा-धोकर, तेल-कंघीकर साफ़-सुथरे स्कूल आते। जब ये आले में बैठे होते तो बहुत सजावटी लगते। जैसे घर से गुड्डे को सजाकर स्कूल के आले में रख दिया गया है। पहले कूना अपनी कक्षा के आले पर चढ़ नहीं पाती थी। कक्षा के बच्चे आले पर चढ़ने में उसकी मदद करते। अब उसकी कोशिश होती कि वह सबसे ऊँचे आले में जाकर बैठे। दिवाल में जगह-जगह खूँटियाँ भी गड़ी थीं। ऊपर की खूँटी पकड़कर आले पर पैर रखते हुए सबसे ऊपर के आले तक पहुँचा जा सकता था। बच्चे बिना डरे आले के अन्दर घुसे पढ़ते। वे नहीं गिरते पर हाथ से किताब छूटकर गिर जाती। कलम, पेंसिल गिर जाती। स्लेट भी गिर सकती थी। ऐसे में लड़के अपने को बचाकर बैठते। परन्तु चीज़ें वहीं गिरतीं जहाँ बच्चे नहीं होते। ऊपर बैठे बच्चे भी सावधान होते कि चीज़ें न गिरें या बार-बार नीचे गिरने वाली चीज़ों की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के साथ मित्रता हो जाती हो। जैसे बार-बार साथ होने से दो बच्चों में हो जाती है। इसलिए चीज़ें अलग हटकर गिरतीं। सावधानी से गिरतीं। नीचे धीरे-से धरा जातीं। गिरने की आवाज़ नहीं होती। इसके बाद भी स्लेट-पट्टी की कलम तीन-चार टुकड़ों में टूट जाती। कलम के नीचे गिर जाने के बाद भी इस ज़रूरत की पूर्ति हो जाती थी। और भी कलम के टुकड़े उनकी जेब या बस्ते में होते। यह भी हो सकता था कि छोटे-छोटे कलम के टुकड़े इल्ली की तरह दीवाल पर चढ़ जाते होंगे। धीरे-धीरे आले तक पहुँच जाते। फिर बस्ते के अन्दर। कॉपी, किताब, स्लेट-पट्टी, कलम आदि का घोंसला या घर बस्ता होता। दिन भर की नीचे गिरी पेंसिलें, कलम, रबर रात भर में आलों में रखा जातीं। हो सकता है कि कबूतर भी चोंच में दबाकर इन्हें आलों में रखते हों। इधर-उधर बने कबूतर के घोंसलों में भी इस तरह की चीज़ें होती थीं। कबूतर बच्चों के लिए जमा रखते हों कि कभी काम पड़ जाए।

आले में बैठने की शुरुआत बोलू ने की। पहले जब गुरूजी नहीं होते थे तब। फिर गुरूजी होते हैं तब भी। कुछ दिनों के बाद से ही बोलू सबसे ऊपर रोशनदान के पास के आले में बैठने लगा था। ऊपर बैठने से गुरूजी का ध्यान बोलू की तरफ कुछ कम जाता था। उनका मन बोलू से प्रश्न पूछने का होता तो रुक जाते कि बोलू खूँटी पकड़-पकड़कर आले पर पैर रखते हुए नीचे उतरेगा और उसका उतरना हल्ला मचाते

हुए सब लड़के देखेंगे। आले पर बैठे लड़के सरककर जगह बनाते कि बोलू उनके आले से उतरे। हल्ला सुनकर पड़ोस की कक्षा के गुरूजी आते तो उनके पीछे कक्षा के सब बच्चे भी आ जाते। कूना सबसे अधिक ताली बजा-बजाकर खुश होती। वह बोलू पर अपनी मित्रता जताते हुए चिल्लाती, "बोलू उस आले से मत उतरना। इससे उतर।" गुरूजी के सामने उतरता हुआ बोलू गुरूजी को दिखाई नहीं देता। और बोलू गुरूजी के पीछे से उतरता।

गुरूजी बोलू से पूछते, "बोलू मैंने तुमसे प्रश्न कितने दिनों से नहीं पूछा है?"

"दो दिन से गुरूजी," चार कदम गुरूजी के पास आकर बोलू ने कहा। फिर कहा, "गलती हुई गुरूजी। आपने अभी प्रश्न पूछा।" आसपास लड़के खड़े थे। बोलते हुए बोलू जब इधर-उधर चलता तो लड़के हटकर उसके लिए जगह बना देते।

"अभी कहाँ पूछा?" गुरूजी ने फिर पूछा।

"बोलू मैंने तुम से प्रश्न कितने दिनों से नहीं पूछा है यह भी प्रश्न था न गुरूजी।" विनम्र संकोच से बोलू ने कहा।

"कल किताब से प्रश्न पूछेंगे। तुम नीचे बैठना।" कुछ देर रुककर गुरूजी ने कहा।

"जी गुरूजी।" बोलू ने कहा, दो कदम पीछे हटते हुए।

बोलू जिस आले में बैठता था उससे सटा हुआ रोशनदान था। रोशनदान इतना बड़ा था कि बोलू उसके अन्दर से निकलकर छप्पर पर आ जाता। रोशनदान से बोलू को हवा आती उसके बाल उड़ते। हवा में मोगरे के फूल की गन्ध होती। वह जान जाता कि यह हवा बीनू के घर की तरफ से आ रही है। कभी बौने पहाड़ की जंगली तुलसी की गन्ध आती। कभी घने जंगल की घनी गन्ध। रोशनदान से अबाबील के अचानक आने-जाने से बोलू चौंकता नहीं था। अबाबील की उड़ान हवा का ऐसा झोंका होता जिसको देखो तो लगता हवा का झोंका दिखा।

लड़के-बस्तों को कभी दीवाल में लगे खूँटों में टाँग देते। आले में बैठे हुए लड़के गटापार्चे के सुन्दर गुड्डों जैसे लगते। पढ़ाई के हल्ले के साथ चिड़ियों का चहचहाना पढ़ाई का हल्ला ही होता। हर जगह गौरय्या होती। करीब-करीब सभी खूँटों पर और बस्ते के ऊपर भी। छुट्टी के बाद यदि बस्ता स्कूल में छूट जाता, त्यौहार के कारण दो दिन की और छुट्टी हो जाती तो गौरय्या बस्ते के ऊपर तिनके रखकर घोंसला बनाना शुरू कर देती।

बोलू ज्यों-ज्यों बड़ा हो रहा था बोलते और चलते समय अपने को अधिक हल्का पाता। पाठ का गीत गुनगुनाते हुए चलता तो उसे लगता कि मोगरे की गन्ध की हवा के सहारे चल रहा है। कभी जंगल की घनी गन्ध की उँगली पकड़कर चल रहा है। कभी माँ का आँचल पकड़कर। कभी उड़ती हुई पतरंगी के साथ।

स्कूल में प्रार्थना के समय वह मनुष्य-हित के लिए असीम ज्ञान की मन ही मन प्रार्थना में तल्लीन हो जाता था। उसे लगता कि वह समझदार हो रहा है। और बड़ा भी। वह धरती पर नहीं हवा में खड़ा है। अभी बाजू में खड़े लड़के के कन्धे तक आ रहा था अब कन्धे से ऊपर हो गया। राष्ट्रगीत के समय सीधे खड़े रहने का अनुशासन सभी बच्चों में था। जहाँ स्थिर खड़े होकर बोलना होता वहाँ बोलू को न बोलने की छूट होती। राष्ट्रगीत को मन ही मन गाता परन्तु उसके होंठ हिलते कि वह गा रहा है। और वह स्थिर खड़ा रहता। मन ही मन वह सबके साथ ज़ोर से गा रहा होता। इस तरह स्थिर खड़े रहते हुए गाने में वह पक्षी की तरह उड़ने को व्याकुल हो जाता।

एक दिन बोलू साँझ के साथ एक मीठी धुन गुनगुनाता हुआ घर से निकल पड़ा। गुनगुनाते हुए वह बौने पहाड़ की ओर जा रहा था। बौने पहाड़ के शिखर तक वह पहुँचा। सूर्य कुछ देर में डूबने को था। तरल-सा सिन्दूरी रंग जैसे सूर्य के पिघलने से नीचे फैल रहा था। बोलू पहाड़ की गहराई के मुहाने तक गया। उसने उसमें झाँका तो लगा कि वह गहराई को बहुत नीचे तक धुँधला-सा देख पा रहा है। सूर्य के नीचे डूबने का प्रकाश तराई से पहाड़ की गहराई में कहीं से जाता हो। तभी उसे शहद की गन्ध आई। शायद मुहाने के पास ही मधुमक्खी ने छत्ता बनाया हो। मधुमक्खी की भिनभिनाहट भी सुनाई दी। शहद से भरकर छत्ता पक गया था। छत्ता पत्थर के गिरने की सीध में नहीं पड़ता था। नहीं तो छत्ता टूट जाता। उसने सोचा कि वह अपने मित्रों को यह बताएगा। मधुमक्खी को वह आते-जाते देखना चाहता था। पराग कण के लिए मधुमक्खी बाहर आती होंगी। कुछ देर वह रुका पर एक भी मधुमक्खी आते-जाते नहीं दिखी। उसके मन में आया कि पहाड़ की गहराई में फूलों से भरा एक बगीचा होगा। इसलिए मधुमक्खी ऊपर न आती हो।

बौना पहाड़ बच्चों का पहाड़ था और बूढ़ों का भी। क्योंकि इस पर चढ़ना कठिन नहीं था।

जारी...

पेड़-परिन्दों, नदी-पहाड़ों की चित्रकार - शोभा घारे

बचपन को याद करती हूँ तो माँ याद आती है। मेरी माँ बड़ी तैराक थी। वह रेत में घर बनाती उसे सीपियों से सजाती। माँ के पाले पशु-पक्षियों से भरा हमारा घर याद आता है। कौओं, पक्षियों पशुओं से वह आज पिछत्तर की उमर भी वैसे ही बातें करती है। बिल्कुल बच्ची है। कभी मीलों फैले सुपारी व नारियल के बागान याद आते हैं। उसे कोई जीव घायल दिखता तो उसकी मरहम पट्टी करती। आज हाल यह है कि मोहल्ले भर के जानवर जख्मी होते ही हमारे घर के सामने खड़े हो जाते हैं। आसपास के सब ज़ुबाँ-बेज़ुबा घर परिवार के लगते हैं। न मैंने उन्हें अलग से पहचाना, न वे मुझे अलग से जानते हैं। ***शोभा घारे***

पी. एम. लाड

तोते रहते तेरह तोते

मालाबार पैराकीट

इन्हें मदन गोर तोता भी कहते हैं। ये ज़्यादातर पश्चिमी घाट और दक्षिण भारत में दिखते हैं। खासतौर पर केरल और कर्नाटक में। परों और पूँछ पर नीले रंग से इन्हें पहचाना जाता है। ये ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर अपने घोसले बनाते हैं। आम तौर पर ये उड़ते समय ही आवाज़ निकालते हैं।

ये फोटो तमिलनाडु के इन्दिरा गांधी अभयारण्य में खींची गई हैं।

रेड ब्रेस्टिड पैराकीट

हिमालय की तराई से अरुणांचल प्रदेश तक ये नज़र आ जाते हैं। ये बहुत शोर मचाते हैं। नर के गले की काली पट्टी मादा के गले की पट्टी से ज़्यादा चौड़ी होती है। ये ज़्यादातर दूसरे तोतों की तरह ही किसी पेड़, दीवार आदि के छेद में घोंसले बनाते हैं।

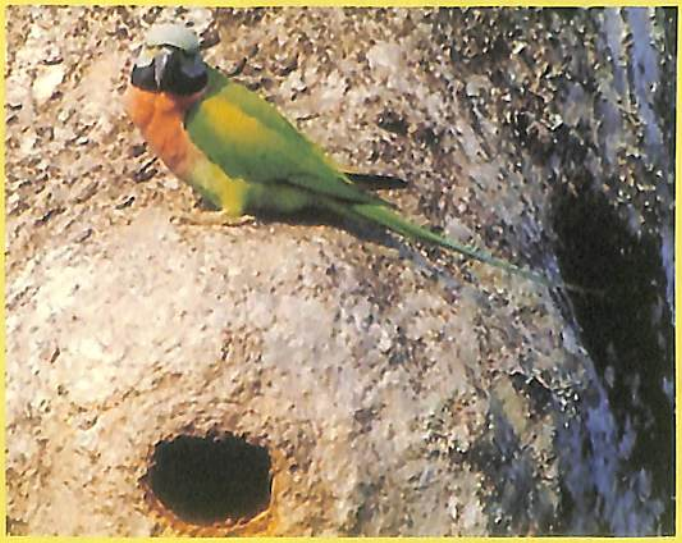

अरुणांचल प्रदेश का रेड ब्रेस्टिड पैराकीट

उत्तरांचल में रामनगर के पास सीतामड़ी के एक मन्दिर के पास ली गई फोटो।

रोज़ रिंग्ड पैराकीट

गले में लाल धारी के कारण उसे यह नाम मिला है। इसे सुग्गा के नाम से भी पुकारा जाता है। यह पूरे भारत में पाया जाता है।

आता तोता, जाता तोता

इन लाइनों को जल्दी-जल्दी पाँच बार बोल के दिखाओ।

ज़्यादातर पक्षी अपनी पाचन क्रिया को दुरुस्त रखने के लिए चट्टान, पत्थर खाते हैं। छत्तीसगढ़ में अम्बिकापुर के पास महेन्द्रनगर में कड़ी चट्टान को कुरेदता तोता।

अलेक्ज़ेन्डरीन पैराकीट

इसे आम तौर पर हीरामन या करन तोता कहते हैं। तोतों में यही सबसे ज़्यादा बोलने वाला तोता है। मनुष्यों की बोली की नकल करने के कारण इसे लोग पालते हैं। यह सारे भारत में पाया जाता है।

हैंगिंग पैराकीट

लटकू तोते। ये आम तौर पर दक्षिण भारत में ही दिखते हैं।

केरल में खींची गई लटकू तोते की फोटो।

रायगढ़ में लटकू तोता।।

प्लम हेडिड पैराकीट

इसे टुइंया या ट्यूची तोता भी कहते हैं। यह पूरे भारत में पाया जाता है। इसकी उड़ान सीधी होती तथा अन्य तोतों से तेज़ होती है।

उत्तरांचल में खींची गई फोटो।

स्लेटी हेडिड पैराकीट

आम तौर पर हिमालय की तराई में पाए जाते हैं। यहाँ ये बहुतायत में दिखते हैं। उत्तरांचल में रानीखेत से रामनगर के रास्ते में केले के पेड़ पर अपनी दुम मुँह में दबाए बैठा यह तोता।

अगले अंक में

पंछी आना देस हमारे में

प्रवासी पंछियों से मुलाकात

पंजीयन क्र. 50309/85 के अन्तर्गत भारत सरकार के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/ भोपाल/2006-08

सईदन अम्मां

अरी ओ सईदन अम्मां
क्या ढूँढ रही है?
खो गया क्या तेरा
तू क्या ढूँढ रही है?

फूस के फूफा का पता
हवा की खाला का पता
बारिश की चाची का पता
पेड़ों की मासी का पता
तुझे पता हो तो बता
ढूँढ रही हूँ
वरना तू क्या पूछे
मैं क्या ढूँढ रही हूँ।

अरी ओ सईदन अम्मां
क्या ढूँढ रही है?
खो गया क्या तेरा
तू क्या ढूँढ रही है?

भैंस के भाई का पता
झाड़ की ताई का पता
कीकर की बाई का पता
ऊँट के नाई का पता
तुझे पता हो तो बता
ढूँढ रही हूँ
वरना तू क्या पूछे
मैं क्या ढूँढ रही हूँ?

अरी ओ सईदन अम्मां
क्या ढूँढ रही है?
खो गया क्या तेरा
तू क्या ढूँढ रही है?

गुजरात गई बेटी
ईरान गया बेटा
बहन भाई में से
कोई भी नहीं लौटा
तो बाँस की लाठी का पता
देश की माटी का पता
भूख की रोटी का पता
तुझे पता हो तो बता
ढूँढ रही हूँ
वरना तू क्या पूछे
मैं क्या ढूँढ रही हूँ?

प्रभात

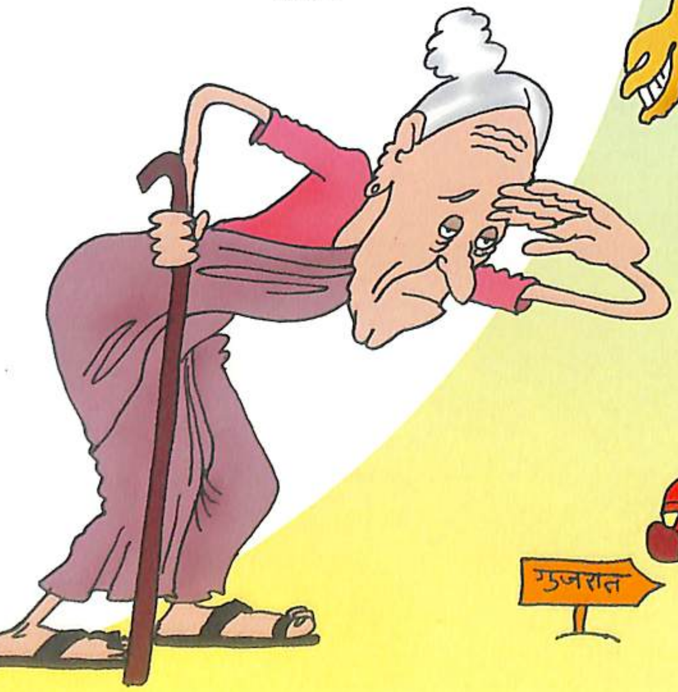

रैक्स डी रोज़ारियो की ओर से निदेशक, एकलव्य द्वारा ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 16 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. 15-बी, जे. के. रोड इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल (फोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित। सम्पादकः सुशील शुक्ल।